R.N.I. No.: UTTHIN/2015/63078

डाक पंजीयन :- UA/DO/DDN/25/2021-2023

श्रमयोग पत्र

सेवा में

.....

.....

.....

.....

वर्ष : 09 अंक : 02 (हिन्दी मासिक) देहरादून, 01 मई 2023 मूल्य - 5.00 ₹ प्रति पृष्ठ-8 वार्षिक मूल्य -100 ₹

मानव-वन्य जीव संघर्ष-जागरूकता जत्था

मंच की माँगों को मिल रहा है भारी जन समर्थन

जानवरों के पक्ष को भी समझ रहे हैं ग्रामीण

सल्ट में मंच का जागरुकता जत्था।

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

उत्तराखंड राज्य के अल्मोड़ा व पौड़ी गढ़वाल जिले में इन दिनों मानव-वन्यजीव संघर्ष अपने चरम पर है। इन दोनों जिलों में पिछले 4-5 माह में कम से कम चार लोगों की मौत हुई है और 3 लोग घायल हुए हैं। इस बढ़ते संघर्ष को देखते हुए रचनात्मक महिला मंच की 31 मार्च को हुई त्रैमासिक बैठक में निर्णय लिया गया था की अल्मोड़ा जिले में सल्ट व पौड़ी गढ़वाल जिले में नैनीडांडा विकास खंड में मानव-वन्यजीव संघर्ष पर जागरूकता जत्था आयोजित किया जायेगा। इसी क्रम में अप्रैल माह में सल्ट के गांव-गांव में जागरूकता जत्था चल रहा है।

जागरूकता जत्था में रचनात्मक महिला मंच की सदस्याऐं व ग्रामीण बड़ी संख्या में भाग ले रहे हैं। जत्था पूरी तरह जन सहयोग से चल रहा है। स्थानीय दुकानदार भी आर्थिक सहयोग कर रहे हैं। जत्थे मे जंगली जानवरों की संकट में पड़ती आवासीय परिस्थितियों, जंगलों में भोजन व पानी की कमी, वन विभाग की इस मुद्दे पर असंवेदनशीलता, जंगलों में आग जैसे विषयों पर नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से जागरूकता की जा रही है। जत्थे में नुक्कड़ नाटकों का मंचन टीम श्रमयोग द्वारा किया जा रहा है। जत्थे में रचनात्मक महिला मंच के मांगपत्र को भारी जन समर्थन मिल रहा है व हस्ताक्षर अभियान भी चल रहा है।

जागरूकता जत्था के दौरान मरचुला में हुई सभा में बोलते हुए रचनात्मक महिला मंच की अध्यक्षा निर्मला देवी ने मंच की माँगों को सबके सामने रखा। उन्होंने कहा हमारी माँग है कि जंगली जानवर के हमले से होने वाली मनुष्य की मौत का मुआवजा रू0 25 लाख किया जाय, जंगली जानवरों के हमले में घायल होने वाले व्यक्ति के इलाज का पूरा खर्च सरकार वहन करे, जंगली जानवरों के हमले में मरने वाले खच्चर के लिये मुआवजा ₹1 लाख, गाय के लिये ₹50 हजार व बकरी के लिये ₹20 हजार हो, जंगली जानवरों द्वारा फसलों को होने वाले नुकसान का मुआवजा बढ़ाया जाय, उक्त मुआवजे को प्राप्त करने की प्रक्रिया को आसान किया जाय व पंचायती वनों को पूरी तरह ग्रामीणों को सौंपा जाय एवं उनके लिये हर वर्ष ग्राम पंचायतों को मिलने वाली वित्त की निधि की तर्ज पर विकासात्मक गतिविधियों के लिये निश्चित निधि की व्यवस्था की जाय।

मंच इस सम्बन्ध में शीघ्र हे एक ज्ञापन मुख्यमंत्री को सौपेगा। चाँच में हुई सभा में बोलते हुए रचनात्मक महिला मंच की सचिव सुनीता देवी ने कहा जब तक हमारी मांगे पूरी नहीं होती संघर्ष जारी रहेगा।

मानव-वन्यजीव संघर्ष जागरुकता जत्था

मानव-वन्यजीव संघर्ष के कारणों को समझें

- ⇨ सिकुड़ते वन आवरण के कारण बाघों, हाथियों इत्यादि के घटते आवास उन्हें जंगल से बाहर निकलने और मनुष्यों पर हमला करने के लिए मजबूर करते हैं।
- ⇨ वन्यजीव गलियारों में सड़को इत्यादि के निर्माण के कारण वन्यजीवों का मार्ग बाधित हो गया है।
- ⇨ जंगलों में लगने वाली आग के कारण जानवर जंगल से बाहर निकल आते हैं।
- ⇨ जंगलों में भोजन व पानी की कमी के कारण जानवर जंगल से बाहर निकल आते हैं।
- ⇨ जंगलों में वर्चस्व हेतु संघर्ष के कारण कमजोर जानवर जंगल से बाहर निकल आते हैं और मनुष्यों पर हमला करते हैं।

सावधान रहें

- ⇨ जंगली जानवरों से सतर्क रहें।
- ⇨ पशुओं के लिये घास एकत्र करने के दौरान या खेतों में काम करते समय अपने कान व आँखें खुली रखें।
- ⇨ काम करने जाते-आते बातचीत करते रहें, चुपचाप न चलें।
- ⇨ पशुओं के लिये घास लेने समूहों में ही जायें।
- ⇨ गाँवों के आस-पास झाड़ियों का कटान करें। झाड़ियाँ ही जानवर को छिपने की जगह देती हैं, जहाँ छिपकर वह हमला करता है।
- ⇨ बाखलियों में रात्रि में पर्याप्त प्रकाश करें।
- ⇨ छोटे बच्चों को अकेला न छोड़े। बच्चे स्कूल समूहों में ही जायें।
- ⇨ जंगल में लगने वाली आग के प्रति बेहद सतर्क रहें।

हमारी माँगें

- ⇨ जंगली जानवर के हमले से होने वाली मनुष्य की मौत का मुआवजा रू0 25 लाख किया जाय।
- ⇨ जंगली जानवरों के हमले में घायल होने वाले व्यक्ति के इलाज का पूरा खर्च सरकार वहन करे।
- ⇨ जंगली जानवरों के हमले में मरने वाले खच्चर के लिये मुआवजा रू0 1 लाख, गाय के लिये रू0 50 हजार व बकरी के लिये रू0 20 हजार हो।
- ⇨ जंगली जानवरों द्वारा फसलों को होने वाले नुकसान का मुआवजा बढ़ाया जाय।
- ⇨ उक्त मुआवजे को प्राप्त करने की प्रक्रिया को आसान किया जाय।
- ⇨ पंचायती वनों को पूरी तरह ग्रामीणों को सौंपा जाय एवं उनके लिये हर वर्ष ग्राम पंचायतों को मिलने वाली वित्त की निधि की तर्ज पर विकासात्मक गतिविधियों के लिये निश्चित निधि की व्यवस्था की जाय।

रचनात्मक महिला मंच

हिनौला, मौलेखाल (सल्ट), पो0-देवायल, जिला-अल्मोड़ा- 244715

सहयोग: श्रमयोग समुदाय

हमारी पाती

प्रिय साथियो,

श्रमयोग पत्र के नवें वर्ष का दूसरा अंक लेकर हम आपके बीच हैं। श्रमयोग पत्र अपनी आठ वर्ष की यात्रा पूरी कर चुका है। कहना होगा कि ये आठ वर्ष सीखों से भरे रहे। वर्ष 2015 के अप्रैल माह में जब हम कुछ गैर पत्रकारों ने श्रमयोग पत्र के रुप में एक सामुदायिक समाचार पत्र प्रारम्भ किया तब हमें पता नहीं था कि यह यात्रा कब तक चलेगी। हम अपने समुदाय की जरूरतों को तो समझते थे परन्तु शब्द से शब्द व वाक्य से वाक्य जोड़कर कुछ रोचक लिख देना हमारे लिये सम्भव न था और वो संघर्ष आज भी जारी है। पाठकों की सहनशीलता व सुझावों की ताकत ही थी कि श्रमयोग पत्र के निरन्तर 98 अंक निकल चुके हैं।

पत्र की सफलता व असफलता को आंकने का कार्य तो पाठको का है, परन्तु बहुत सहजता से हम यह कहना चाहते है कि पर्वतीय उत्तराखण्ड के गाँवों में रहने वाले बच्चे व महिलायें, जिनकी जिन्दगी में अखवार पहले कभी शामिल नहीं रहे अब वे श्रमयोग पत्र के पत्रकार हैं और निरन्तर पत्र में लिख रहे हैं। पत्र के माध्यम से विशेषकर महिलाओं की न सुनी जा सकने वाली आवाज अब मुखरता से लोगों के बीच आ रही है। श्रमयोग पत्र ने उन्हें उन मुद्दों को समाज के बीच लाने का मंच दिया है, जो अन्यथा पानी के स्रोतों में पानी भरते हुए, जंगलों में घास काटते हुए या खेतों में फसलो को गोढ़ते हुए ही खत्म हो जाते।

पत्र को निकालने में निरन्तरता कायम करना दृढ इच्छा शक्ति का काम है। पत्र मे लिखने वाले हमारे साथियों की दृढ इच्छा शक्ति का कमाल ही है कि श्रमयोग पत्र बिना रूके पिछले आठ वर्षों से निरन्तर निकल रहा है और सामुदायिक पत्रकारिता की मुहीम को मजबूत कर रहा है।

साथियो, सामुदायिक खबरें आज मुख्यधारा की मीडिया से पूरी तरह गायब हैं। ऐसे में सामुदायिक आवाजों को मजबूत करने के लिये सामुदायिक मीडिया को सशक्त करना ही एकमात्र विकल्प है। श्रमयोग पत्र के माध्यम से सामुदायिक पत्रकारिता आन्दोलन को मजबूत करने की जिम्मेदारी हम सबके ऊपर है। हम श्रमयोग पत्र का संचालन मुख्य रुप से पाठकों द्वारा अदा किये जाने वाले सदस्यता शुल्क से करते हैं व गैर-लाभकारी समाचार पत्र हैं। पत्र की वार्षिक सदस्यता ₹100 (डाकखर्च सहित) व आजीवन सदस्यता ₹1000 है। आपके द्वारा ग्रहण की गयी पत्र की सदस्यता सामुदायिक पत्रकारिता के उत्थान की इस मुहिम को मजबूत करेगी। अब तक आपसे मिले हर तरह के सहयोग के लिये आभार।

जिन्दाबाद!

भीतर के पृष्ठों में

- ❑ गांव घर की खबर – पृष्ठ 2
- ❑ ढाई आखर – पृष्ठ 3
- ❑ कहानी–जंगल का कानून – पृष्ठ 4
- ❑ गर्मियों में रखें स्वास्थ का ख्याल – पृष्ठ 5
- ❑ कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट – पृष्ठ 6
- ❑ विज्ञान मंथन कार्यक्रम रिपोर्ट – पृष्ठ 8

मौसम का हाल

मौसम विभाग के अनुसार उत्तराखण्ड राज्य में 1–28 अप्रैल तक कुल 60.40 मीमी वर्षा रिकॉर्ड की गई जो सामान्य (36.30 मीमी) से अधिक है। राज्य में मई माह के पहले पखवाड़े में ऊपरी इलाकों में बौछार पड़ने की सम्भावना है। निचले इलाकों में मौसम आमतौर पर शुष्क रहेगा।

मई माह-सावधानियाँ

जंगली जानवरों से सतर्क रहें। पशुओं के लिये घास लेने समूहों में ही जायें। गाँवों के आस–पास झाड़ियों का कटान करें। बाखलियों में रात्रि में पर्याप्त प्रकाश करें। जंगल में लगने वाली आग के प्रति बेहद सतर्क रहें। बाहर से घर वापस लौटने पर हाथों को साबुन से धोयें।

मई माह में विशेष दिवस

01 मई	–	अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस
03 मई	–	विश्व प्रेस स्वतन्त्रता दिवस
08 मई	–	विश्व थैलेसीमिया दिवस
10 मई	–	मानव–वन्यजीव संघर्ष–ज्ञापन
22 मई	–	अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस
30 मई	–	टीम श्रमयोग बैठक
31 मई	–	विश्व तम्बाकू निषेध दिवस

सम्पादकीय

मई दिवस की रोशनी में

आज से लगभग 134 साल पहले मजदूरों के अंतर्राष्ट्रीय संगठन ने सन् 1889 में वह फैसला लिया कि प्रत्येक वर्ष पहली मई के दिन दुनिया भर के मजदूरों के संगठन एक ही झंडे तले, एक संगठित फौज के रूप में 8 घंटे कार्य-दिवस का कानून बनाने की मांग पर जनांदोलन करेंगे। बाद के वर्षों में इसमें मजदूर वर्ग की अन्य राजनैतिक मागें भी जुड़ती गई। मजदूर वर्ग के अन्तर्राष्ट्र ने यह फैसला उस वक्त किया था जब पूंजीपति वर्ग मजदूरों से प्रतिदिन 16 से 20 घंटे काम लेता था, उनका भारी शोषण करता था जिससे मजदूरों का शारीरिक व मानसिक विकास बाधित होता था।

काम के घंटों को कम कराने के लिए मजदूर संगठन अपनी-अपनी सरकारों के खिलाफ संघर्षरत थे। उस वक्त यह वैज्ञानिक सत्य भी स्थापित हो चुका था कि मजदूर के अतिरिक्त श्रम-काल (एक मजदूर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उत्पादन कर लेने के बाद जितने अधिक समय काम करता है यह अपने लिए नहीं बल्कि मालिक के लिए करता है और इस अतिरिक्त समय की मजदूरी उसे नहीं मिलती) में उत्पन्न अतिरिक्त मूल्य को चुराकर पूंजीपति मुनाफा कमाता है और पूंजीवादी राज्य का कानून इस चोरी को चोरी नहीं मानता। यह सत्य पूंजीपति वर्ग और उसकी सरकार के खिलाफ मजदूर वर्ग को राजनैतिक तौर पर सचेत व बलवान बना रहा था। ऐसी स्थिति में मजदूर वर्ग के अन्तर्राष्ट्र ने मजदूर वर्ग के लिए यह कर्तव्य निर्धारित किया कि वह सारी दुनिया में एक मई को एक साथ एक संगठित राजनैतिक शक्ति के रूप में सामने आकर पूँजीपति वर्ग के राज्य से 8 घंटे काम की सीमा तय करने का कानून बनाने की मांग करे।

तब से लेकर आज तक पूंजीवाद के आम नियम के अनुसार सम्पति का केन्द्रीयकरण चंद पूजीपतियों के हाथों में होता रहा है। अर्थात सामाजिक उत्पादन का फल पूंजी के अनुपात में पूंजी के मालिकों के हाथ में केन्द्रित होता रहा है। दूसरी ओर उत्पादन के साधनों से और इसलिए उत्पादन के फल से वंचित उत्पादकों अर्थात मजदूरों की भारी आबादी बेकारी, गरीबी, कंगाली की गर्त में गिरती रही है। प्रतिवर्ष बेरोजगारों की फौज बढ़ती जा रही है जिन्हें मौजूदा पूंजीवादी व्यवस्था काम नहीं दे पा रही है।

वर्तमान में वैश्विक पूंजीवाद ज्यों-ज्यों महरे आर्थिक-राजनैतिक संकट में फंसता जा रहा है त्यों-त्यों वह मजदूर वर्ग को और अधिक दबाता जा रहा है। पूंजीपति वर्ग 8 घंटे के श्रम दिवस के कानून को किनारे रखकर कानून का ही इस्तेमाल करके वास्तव में 12-16 घंटे काम करा रहा है और अपनी सरकारों के जरिए अपने हित में श्रम कानूनों में सुधार करवा रहा है। अत: आज मई दिवस की यही पुकार है कि मजदूर अपने बीच के सारे भेदभावों को दूर रखकर संगठित हो, फैक्ट्री, ऑफिस, श्वेत-खलिहानों, स्कूल-कालेजों, गांव-मोहल्लों में अपने एकमात्र दुश्मन पूंजीवाद के खिलाफ अपनी एकता को मजबूत करें, पूंजीवादी पार्टियों द्वारा परिचालित ट्रेड यूनियनों के पूंजीवादी नेतृत्व के खिलाफ संघर्ष करें और मजदूरों के राज को कायम करने की आवाज बुलंद करें।

पाठकों के लिए

श्रमयोग पत्र में अपने प्रिय पाठकों की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये **'गांव घर की खबर'** नाम से स्तम्भ प्रकाशित किया जाता है। आप समाज, देश, गांव, खेती, राजनीति, मानव मूल्य आदि किसी भी विषय पर अपनी बेबाक राय हमें भेजें। हमें इसे प्रकाशित करने में प्रसन्नता अनुभव करेंगे। विचार कभी भी दबाए नहीं जाने चाहिये, इन्हें शब्द रूप दें।

-सम्पादक

श्रमयोग समुदाय की सदस्यता ग्रहण करें।

साथियों श्रमयोग आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही गतिविधियों का संचालन करता है। हम किसी भी सरकारी या गैर सरकारी संस्थान से किसी तरह की आर्थिक मदद प्राप्त नही करते है। अत: अपने अन्य साथियों को भी श्रमयोग समुदाय की सदस्यता लेने हेतु प्रेरित करें। सदस्यता शुल्क रू0 200/- वार्षिक है। प्रत्येक सदस्य तक ''श्रमयोग पत्र'' डाक द्वारा निशुल्क भेजा जायेगा। सदस्यता आवेदन पत्र के लिये आप shramyogcommunity@gmail.com पर पत्र भेज सकते है। श्रमयोग की गतिविधियों को जानने के लिये www.shramyog.org को देखें।

गांव घर की खबर

बढ़ते मानव-वन्यजीव संघर्ष से पलायन बढ़ रहा है

✍ निर्मला देवी, अध्यक्षा
रचनात्मक महिला मंच

साथियों नमस्कार!

आशा करती हूँ आप अपने घर परिवार के साथ खुश होगें। अप्रैल की बैठकें अच्छे से हो गई हैं।

आप सभी इस बात से अवगत हैं की बाघ के आतंक से सल्ट वह गढ़वाल में कितने भाइयों और बहनों की जान चली गई है, जिसके चलते रचनात्मक महिला मंच जागरुकता जत्था कर रहा है और सरकार तक आवाज पहुंचाने के लिए एक मांग पत्र तैयार कर रहा है। जब जंगली जानवरों के द्वारा किसी परिवार के किसी सदस्य को मार दिया जाता है तब उस परिवार को कौन संभालेगा। इसलिए रचनात्मक महिला मंच सरकार से मांग करता है कि, पीड़ित परिवार को रु0 4 लाख की जगह रु0 25 लाख मुआवजा दिया जाए। यदि किसी की गाय या भैस या किसी भी मवेशी को जंगली जानवरों द्वारा मार दिया जता है तो उसे भी मुआवजा देने की मांग करता है।

बढ़ते मानव-वन्यजीव संघर्ष से पलायन बढ़ता जा रहा है, इस पलायन को कैसे रोका जाए यह बहुत चिंता का विषय है। जंगलों में भी हर तरफ आग लगना शुरू हो गया है, इसलिए जंगली जानवरों ने नजदीक आना शुरू कर दिया, नीलगाय दिनदहाड़े खेतों में दिखाई दे रही हैं। मिर्च के साथ खेतों में धनिया, जीरा बोया था उसे खाते जा रही हैं। गर्मी के बढ़ने से पानी की समस्या गांव में बढ़ती जा रही है। आजकल गांवों में बदलते मौसम के कारण बुखार भी आ रहे हैं, अपने बच्चों तथा बुजुर्गों का ध्यान दें। मंच से जो बीज मिला उसमें धनिया और बीन्स अच्छे हो गए हैं, श्रम-उत्पाद की बात करें तो आजकल हल्दी एकत्र हो रही है।

गांव में बाघ के कारण डर का माहौल बना हुआ है, महिलाएं अभी भी अकेले खेतों में तथा अपने पशुओं के लिए घास लेने जंगल जा रही हैं। इस वर्ष कई गांव के लोगों ने अपने बच्चों को रामनगर या दिल्ली पढने के लिए भेज दिया है, गांव के हर घरों में एक या दो लोग रह गए हैं, वह भी बुजुर्ग हैं। इसका फायदा बाहर वाले लोग उठा रहे हैं। अब गांव में चोरों का भी भय होने लगा है, हर तरफ से समस्या दिखाई दे रही हैं।

मंच एंव श्रमयोग टीम द्वारा जागरूकता जत्था

✍ उमा, झिमार

साथियों नमस्कार। आशा है कि आप सब कुशल होंगे। जैसा कि आप सभी को यह जानकारी है कि हमारे पहाड़ों में मानव-वन्यजीव संघर्ष कितनी तेजी से बढ़ रहा है, जिसको देखते हुए रचनात्मक महिला मंच एंव श्रमयोग टीम द्वारा एक जागरूकता जत्था चलाया जा रहा है, जो 10 अप्रैल से शुरू हुआ और सबसे पहले रिंक्कासी गांव में शुरू किया गया। जत्था में हम नुक्कड़ नाटक के जरिये सभी को यह बताने का प्रयास कर रहे हैं कि मानव वन्यजीव संघर्ष से ना केवल मनुष्य को दिक्कत है बल्कि जानवरों को भी परेशानी है। आज पूरी दुनिया में मनुष्य और जानवरों के बीच संघर्ष बढ़ रहा है, इसके जिम्मेदार मनुष्य भी है। यदि लोग खेतीबाड़ी न छोड़ते, जंगलों में आग ना लगाते तो राज्य भर में जानवरों का इतना आतंक न होता। जब इंसानों ने जंगलों में भी अपना कब्जा कर लिया है तो जानवर भी कहां जाएंगे।

प्राचीन काल में हिमालय क्षेत्र के विशाल जंगल हरे-भरे एवं अनेक प्रकार की वन्य जीव प्रजातियों से भरे थे। इससे जंगली जानवरों के प्राकृतिक आहार में कोई कमी नहीं थी। प्राकृतिक संतुलन सुचारू रूप से चल रहा था। आज बढ़ती हुई आबादी एवं सिमटते हुए जंगलों के कारण वन्य जीव प्रजातियां या तो विलुप्त हो गई है या इनकी संख्या कम हो गयी है। जगंलों में जगह न होने के कारण गुलदार घरों के पास आ रहे हैं और नरभक्षी हो रहे हैं। जत्थे के दौरान रचनात्मक महिला मंच द्वारा एक मांग पत्र भी तैयार किया जा रहा है। यह तय किया गया है कि इस पूरे माह पूरे सल्ट में जत्था किया जाएगा, आप सभी से अनुरोध है कि अपना सहयोग बनाए रखें क्योंकि यह लड़ाई हम सब की है।

हमने मानिला में जत्था निकाला

✍ अनीता, बिरलगांव तल्ला

मानव-वन्यजीव संघर्ष दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, रचनात्मक महिला मंच एंव श्रमयोग टीम इसके ऊपर एक जत्था कार्यक्रम आजकल निकाल रही है, इस कार्यक्रम में श्रमयोग टीम ने एक नाटक तैयार किया है। जिसमें हमने सिर्फ मानवों का ही पक्ष नहीं बल्कि जानवरों का भी पक्ष दिखाया गया है। इस वजह से यह नाटक बहुत ही ज्ञानवर्धक है, क्योंकि अगर तकलीफ इंसानों को होती है तो जानवरों को भी होती है, जिससे हम लोग समझ नहीं पाते।

इस नाटक के जरिए लोग हमारी बातें और जानवरों की बातें समझ रहे हैं। मैंने नाटक तो किए हैं परंतु ऐसा नहीं किया, यह बहुत ही अलग है, इस जत्थे कार्यक्रम में हमने सड़कों पर नाटक किया जो मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। पहले-पहले मन में ख्याल तो होता है कि कैसे करेंगे लोग हमपर हसेंगे, पर शायद यह सिर्फ मेरे मन में था। किसी को हंसना भी तो अच्छी बात है, और एक स्वयंसेवी कभी अपने मन में यह बातें नहीं रखता।

मैं इस दौरान बहुत कुछ सीख रही हूं। इससे मेरी झिझक कम हो रही है, 15 अप्रैल को बैसाखी का मेला मानिला में लगा। वहां पर अनगिनत लोग थे। हमने उन सब के बीच अपना जत्था निकाला। मुझे तो बहुत ही गर्व हो रहा था, क्योंकि लोग हमें देख रहे थे। मैं बहुत खुश हूं। मैं धन्यवाद करती हूं अपनी टीम का जो इतना साहस रखती है। मुझे गर्व है अपने पूरे श्रमयोग और रचनात्मक महिला मंच पर जो हर समय हर किसी के साथ रहती है।

पर्याप्त मुआवजे का प्रावधान नहीं है

✍ दिव्या, कालीगाड़

हमारे पहाड़ों में मानव-वन्यजीव संघर्ष लगातार बढ़ता जा रहा है। मनुष्य को जानवरों से तथा जानवरों को मनुष्य से खतरा पहले से ज्यादा हो गया है। इसी मानव-वन्यजीव संघर्ष को समझने के लिए श्रमयोग तथा रचनात्मक महिला मंच मिलकर एक जागरूकता जत्था कर रहे हैं, जिसमें इस संघर्ष को दिखाने के लिए हर जगह नुक्कड़ नाटक किये जा रहे हैं। इस जत्थे में सिर्फ मनुष्य के पक्ष को ही नहीं बल्कि जानवरों के पक्ष को भी दिखाया गया है, कि कैसे मानव के बढ़ते लालच ने जंगली जानवरों को उनके घर से बेघर कर दिया है जिस कारण जानवर भी मनुष्य के आवासों की ओर बढ़ कर उन पर जानलेवा हमला कर रहे हैं।

इस बढ़ते मानव-वन्यजीव संघर्ष से हमारे पहाड़ों में पलायन बढ़ गया है। लोग धीरे-धीरे शहरों की ओर जा रहे हैं। क्योंकि जानवरों के हमले से जिनकी मौत हो रही है उनके लिए कोई पर्याप्त मुआवजे का प्रावधान नहीं है, और जो मुआवजा है, अभी वह भी उनको पूरा नहीं मिल पा रहा। जंगली जानवरों द्वारा फसलों को पहुंचाए गए नुकसान पर भी कोई मुआवजा आसानी से नहीं मिल पा रहा है। इसलिए इस जत्थे से हम अपने अधिकारों को पाने का प्रयास कर रहे हैं। हालांकि एक मनुष्य के जीवन की कीमत हम कभी पैसों में नहीं लगा सकते लेकिन अगर यह दुर्घटना किसी के साथ हो गई तो उसका मुआवजा कम-से-कम 25 लाख होना चाहिए, और हमारी फसलों को हो रहे नुकसान का मुआवजा भी हमको मिलना चाहिए।

अगर किसी जानवर द्वारा किसी भी मनुष्य को क्षति पहुंचाई गई हो तो उसका सारा खर्चा सरकार द्वारा उठाया जाना चाहिए। मनुष्य के पक्ष में तो बात हो गई अब थोड़ा जानवरों के विषय में बात करते हैं। आजकल हम लोग अपने जंगलों में आग लगा देते हैं जिससे जानवरों के आवास जलकर उनके बच्चे भी मर जाते हैं, इसी कारण वह आक्रोश में आकर हम पर हमला करते हैं, तो हमको यह कोशिश करनी चाहिए कि हम जानवरों के आवासों को न छेड़े तथा प्रकृति के साथ कोई छेड़छाड़ न करें। जिससे मनुष्य तथा जानवरों के बीच संतुलन बना रहे। जिससे वह भी अच्छे से रह सकें और मनुष्य भी अपना जीवन अच्छे से जी सके।

ढाई आखर.....

पेशावर और चन्द्र सिंह की शौर्य गाथा

✍बिजू नेगी

13 अप्रैल 1919 को, फसल पक-कटकर घर आ जाने के उल्लास के बैसाखी के त्यौहार पर, अमृतसर के जालियांवाला बाग में एकत्रित निहत्थी, शांतिपूर्ण जनता पर फौज द्वारा गोलियों की बौछार में करीब 400 बच्चे, बुजुर्ग, औरत, मर्द सीधे शिकार हुए या भगदड़ में बाग के कुंए में छलांग लगाकर उनकी जीवनलीला समाप्त हुई। उस काण्ड ने देश में गुलामी से आजादी की सुगबुगाहट को एक गहरी रेखा में तब्दील किया और 1920-22 में आजादी का पहला बड़ा सत्याग्रह ''असहयोग आंदोलन'' हुआ।

फिर ''नमक सत्याग्रह'' हुआ जिसमें 6 अप्रैल 1930 को डांडी समुद्र तट पर नमक कानून तोड़ा गया, जिसमें औरतें व्यापक स्तर पर अपने घरों से निकल कर पहली बार सड़कों पर आयीं थीं। आजादी के आंदोलन ने एक बार फिर जोर पकड़ा। देश के उत्तर-पश्चिम में, खान अब्दुल गफ्फार खान की अगुवाई में लाल कुर्ती वाले खुदाई खिदमतगार संघर्ष में मुख्य भूमिका निभा रहे थे और पेशावर में शांति पूर्ण व अहिंसात्मक विरोध, भाषण व रैलियां निरन्तर चल रही थीं। उधर फौज के अधिकारी वर्ग में भी सरगर्मी तेज हो रही थीं ऐसे में, जब 23 अप्रैल को, रॉयल गढ़वाल राईफल की 2/18 बटालियन के एक प्लाटून को पेशावर नगर पहुंचने का आदेश हुआ तो आंदोलनकारियों के खिलाफ सीधी फौजी कार्यवाही किये जाने की अशंका तेज थी।

उस दिन एक ओर खुदाई खिदमतगार के आंदोलनकारी थे और उनके सामने कैप्टन रिकेट की अगुवाई में फौज की एक प्लाटून। एकाएक, कैप्टन रिकेट का ऊंचे स्वर में आदेश हुआ, ''गढ़वाली तीन राऊण्ड फायर (करो)!'' बगैर एक भी क्षण गंवाए, कैप्टन के बगल में प्लाटून कमाण्डर चन्द्र सिंह भण्डारी की उससे भी ऊंची आवाज गूंजी, ''गढ़वाली सीज़ फायर (अर्थात् फायर रोक दो)!'' और प्रतिध्वनी की तरह प्लाटून के अलग-अलग कोनों से कुछ और आवाजें आयीं ''गढ़वाली सीज़ फायर!'' कोई भी अपनी जगह से नही हिला और लगभग पूरे प्लाटून ने अपनी बंदूकें नीचे जमीन पर रख दीं।

1857 का विद्रोह जो किन्ही स्थानीय मुद्दों व समस्याओं के चलते हुआ और जिसमें देश की पूरी फौज से बगावत करने का आवहान किया गया था, उसके बाद प्रशासन में आमूल चूल बदलाव किया गया। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को बंद कर दिया गया और भारत की लगाम इंग्लैण्ड की सरकार ने पूरी तरह अपने हाथ में ले ली। 1857 की तुलना में, पेशावर में जो हुआ, वह जलियांवाला काण्ड व 1920-22 के असहयोग आन्दोलन की जड़ों से उपजा उसका अदम्य साहस व चरम उदाहरण था।

अंग्रेज शासन, पेशावर की घटना से निसंदेह हिल गया था, खासकर ऐसे फौजियों की अवज्ञा से, जिनकी गढ़वाल राईफल्स के नाम के आगे ''रॉयल'' जुड़ा था, जो सर्वनाम संभवत: पहले विश्व युद्ध में उसके सिपाहियों की अद्वितीय बहादुरी व वफादारी के फलस्वरूप दिया गया था। मगर अंग्रेज सरकार ने तुरन्त कोई बखेड़ा खड़ा नही किया-इसलिए कि एक, वह उस अवज्ञा को इतनी हवा नहीं देना चाहता था कि उसकी आग पूरे देश में फैले और दो, सिपाही हथियारों से लैस तो थे ही और शासन को डर था कि सशस्त्र विद्रोह न हो जाए। मगर अहिंसात्मक सिविल नाफरमानी के अद्वितीय उदाहरण में, सिपाहियों ने चन्द्र सिंह के निर्देश पर अपने सब हथियार बटालियन के शस्त्रागार में जमा कर दिए।

उसके बाद करीब 67 फौजियों को गिरफतार किया गया। चन्द्र सिंह को आजीवन कारावास की सजा हुई, उनकी सब संपत्ति जब्त कर दी गयी, उन्हें जेसीओ के पद से हटाकर मात्र सिपाही का दर्जा दिया गया और बाद में उनका नाम ही फौज की तालिका से हटा दिया गया। उन्हें देशभर की सात अलग-अलग जेलों में रखा गया जहां से वे आखिर में 11 साल बाद 1941 में रिहा हुए। अन्य 39 सिपाहियों को फौज से बर्खास्त कर दिया गया और बाकियों को छोटी-बड़ी सजाएं दी गयीं।

उस दिन और बाद की घटनाओं से साफ है कि चन्द्र सिंह व साथियों का इतना जोखिम भरा काम पूरी तरह से सोच-समझ के साथ लिया गया था। चन्द्र सिंह जून 1929 में बागेश्वर में आयोजित सार्वजनिक सभा में गांधीजी से मिल चुके थे। और उनसे प्रभावित भी थे। और वास्तव में चन्द्र सिंह जालियांवाला काण्ड को भारतीय फौज के माथे पर एक कलंक मानते थे जो उन्हें गहरे तक साल रहा था। चन्द्र सिंह पर जीवनी में राहुल सांकृत्तायन लिखते हैं कि नवंबर 1929 में 2/18 बटालियन का पेशावर में स्थानातंरण के बाद से ही, चन्द्र सिंह व बटालियन के विभिन्न प्लाटूनों के अन्य कनिष्ठ अधिकारी देश की आजादी के मुद्दो पर गुपचुप चर्चा करते थे। यहां तक कि उनमें इस पर भी चर्चा होती थी कि अगर जनता पर सीधी फौजी कार्यवाही होती है तो ऐसे में उन्हें क्या करना चाहिए। वे भली-भांति समझते थे कि सैनिक आदेश की अवहेलना, सैन्य कानून में एक गंभीर जुर्म है जिसमें उन्हें सजा-ए-मौत भी हो सकती है। फिर भी हर प्लाटून व सैक्शन से कम से कम एक व्यक्ति ने जिम्मेदारी ली कि अगर जनता पर गोली चलाने का हुक्म दिया जाता है तो संबंधित व्यक्ति सिपाहियों को गोली चलाने से रोकेगा। सांकृत्तायन चन्द्र सिंह को उद्धृत कर लिखते हैं, ''हमने तय कर लिया था कि हम गढ़वाल के नाम व ख्याति को मिट्टी में नहीं मिलने देंगे। अगर ऐसी स्थिति आती है तो गोली दागने से बेहतर,गोली का सामना करना होगा।''

पेशावर की घटना को ''काण्ड'' की संज्ञा दी गयी, और हम उसे आज तक उसी नाम से पुकारते हैं। जबकि देखा जाए तो वह काण्ड था अंग्रेज शासकों के लिए; हमारे लिए तो वह एक अद्भुत शोर्य का इतिहास है। खुदाई खिदमतगारों पर गोली न चलाकर उस दिन चन्द्र सिंह ने देश प्रेम व राष्ट्रीयता की भावना से कहीं आगे, गहन मानवीयता के प्रति विश्वास को ही रेखांकित किया था।

जानलेवा मानव-वन्यजीव संघर्ष

✍विक्रम, श्रमयोग

उत्तराखण्ड में 65 प्रतिशत वन क्षेत्र होने के कारण जंगल की आग का खतरा भी अधिक रहता है। इस बार शीतकाल में वर्षा सामान्य से करीब 60 प्रतिशत कम हुई है। वर्षा कम होने के कारण जंगलों में नमी भी कम है। जिससे आग का खतरा और अधिक बढ गया है। पिछले वर्षों के आकडों को देखे तो वह भयभीत करने वाले हैं। 2022 में वनाग्नि की लगभग 2200 घटनाऐं हुई जिसमें लगभग 3500 हेक्टेयर वन क्षेत्र को नुकसान पहुंचा, जबकि 2021 में करीब 2800 घटनाएं हुई थीं।

हर वर्ष कि तरह इस वर्ष भी जंगलों में भीषण आग लग रही है। जंगलों की आग से वन सम्पदा को भारी नुकसान हो रहा है। परन्तु इस नुकसान का आकलंन ठीक से नहीं लगाया जा सकता है और न ही इसका कोई पैमाना है जिससे राख हो रही वन सम्पदा का आकलन किया जा सके। इस आग से जहा एक ओर वन सम्पदा नष्ट हो रही है वही दूसरी तरफजंगलो में रहने वाले जीव भी इस आग का शिकार हो रहे हैं। मानव के द्वारा लगाऐ जाने वाली आग से अब सारे जंगली जानवर आवासी क्षेत्र की ओर आ रहे हैं क्योंकि एक मात्र वो ही ऐसा क्षेत्र रह गया है जहा पर आग का प्रभाव नहीं है। जानवरो का मनुष्य के आवासिय क्षेत्र की ओर आने से मानव-वन्यजीव संघर्ष और अधिक बढने की संभावना है।

सल्ट क्षेत्र में मानव-वन्यजीव संघर्ष की घटना बहुत ज्यादा बढ रही है। इसी वर्ष सल्ट क्षेत्र मे 3 महिलाओं को बाघ के द्वारा मारने व एक महिला के घायल होने की खबर सामने आई। ड्यौना, मटवास, खलपाटी व चमाड़ आदि गाँवों में भी बाघ के दिखाई देने कि खबर आ रही है। जिस कारण गांवो में दहशत का माहौल है। चमाड के बलवन्त सिंह जी ने बताया कि आजकल गाँव के पास ही दिन में 3 बाघ दिखाई दे रहे हैं। 19 अप्रैल की रात्रि में गिगडे गाँव में देवकी देवी के बैल को बाघ ने घर के पास ही अपना निवाला बना दिया। मटवास गाँव में बाघ का इतना ज्यादा आतंक है कि अब ग्रामीणों ने अपने पशुओं को बेच दिया है और जिन लोगों के पास शहरों में रहने कि थोडी भी व्यवस्था है, वे लोगों शहरों की ओर रूख कर रहे है। हिन्दुस्तान में छपी एक खबर के मुताबिक बीते दिनों बाघ ने तहसील रिखणीखाल व तहसील धुमाकोट में एक-एक व्यक्ति पर हमला कर उन्हें मार दिया था। बाघ प्रभावित क्षेत्रों में सुरक्षा के लिहाज से जिलाधिकारी ने पहले 18 अप्रैल तक अवकाश घोषित किया, अब अवकाश को विस्तारित करते हुए जिलाधिकारी ने क्षेत्र के स्कूल 21 अप्रैल तक बंद रखने के आदेश जारी किए है।

बाघ के साथ साथ बन्दरो का आतंक भी बढ़ता जा रहा है। जहाँ एक ओर बन्दर फसलों को नुकसान पहुचा रहे है वहीं दूसरी ओर एक माह के अन्दर ही बन्दरो के हमले की तीन घटनाऐं सामने आई हैं। जिसमें कुणीधार के दक्ष चंद्र पुत्र किशोर चंद्र बंदरों के हमले में घायल हो गये जिस कारण उन्हे तुरन्त दिल्ली ले जान पडा जहा उनका इलाज चल रहा है। दूसरी घटना कुमारी हर्षिता पुत्री रेवाधर परीक्षा देने जा रही थी तो बंदर ने काट लिया। तीसरी घटना नैतिक पुत्र हरीश चंद्र पर भी बंदरो ने हमला किया।

जो लोग गाँव में हैं, उन्हें तो इस परिस्थिति में रहना सीखना होगा। हम लोगों को सोचना होगा कि अगर मानव-वन्यजीव के संघर्ष को कम करना है तो हमें वन्यजीवों के लिए भी सोचना होगा। जंगलों में आग नहीं लगानी होगी, जंगलों में जंगली फलो के पौधों का रोपण करना होगा, अपने आस-पास हो रही झाड़ियों को मिलकर काटना होगा। घास लाते समय सभी महिलाओं को साथ में जाना होगा, अन्धेरा होने से पहले घर वापस आ जाना होगा व रात्री में घर के पास प्रयाप्त प्रकाश रखना होगा। इस सब बातों पर ध्यान देकर हम लोग कुछ हद तक इस संघर्ष को कम कर सकते हैं।

मई दिवस के अवसर पर शैलेन्द्र का गीत

हर जोर-जुल्म की टक्कर में हड़ताल हमारा नारा है
तुमने मांगें ठुकराई हैं, तुमने तोड़ा है हर वादा
छीना हमसे अनाज सस्ता, तुम छंटनी पर हो आमादा
तो अपनी भी तैयारी है, तो हमने भी ललकारा है
मत करो बहाने संकट है, मुद्रा प्रसार इन्फ्लेशन है
यह बनियों, चोर, लुटेरों को क्या सरकारी कंसेशन है?
बगलें मत झांको, दो जवाब, क्या यही स्वराज्य तुम्हारा है
हर जोर-जुल्म की टक्कर में हड़ताल हमारा नारा है

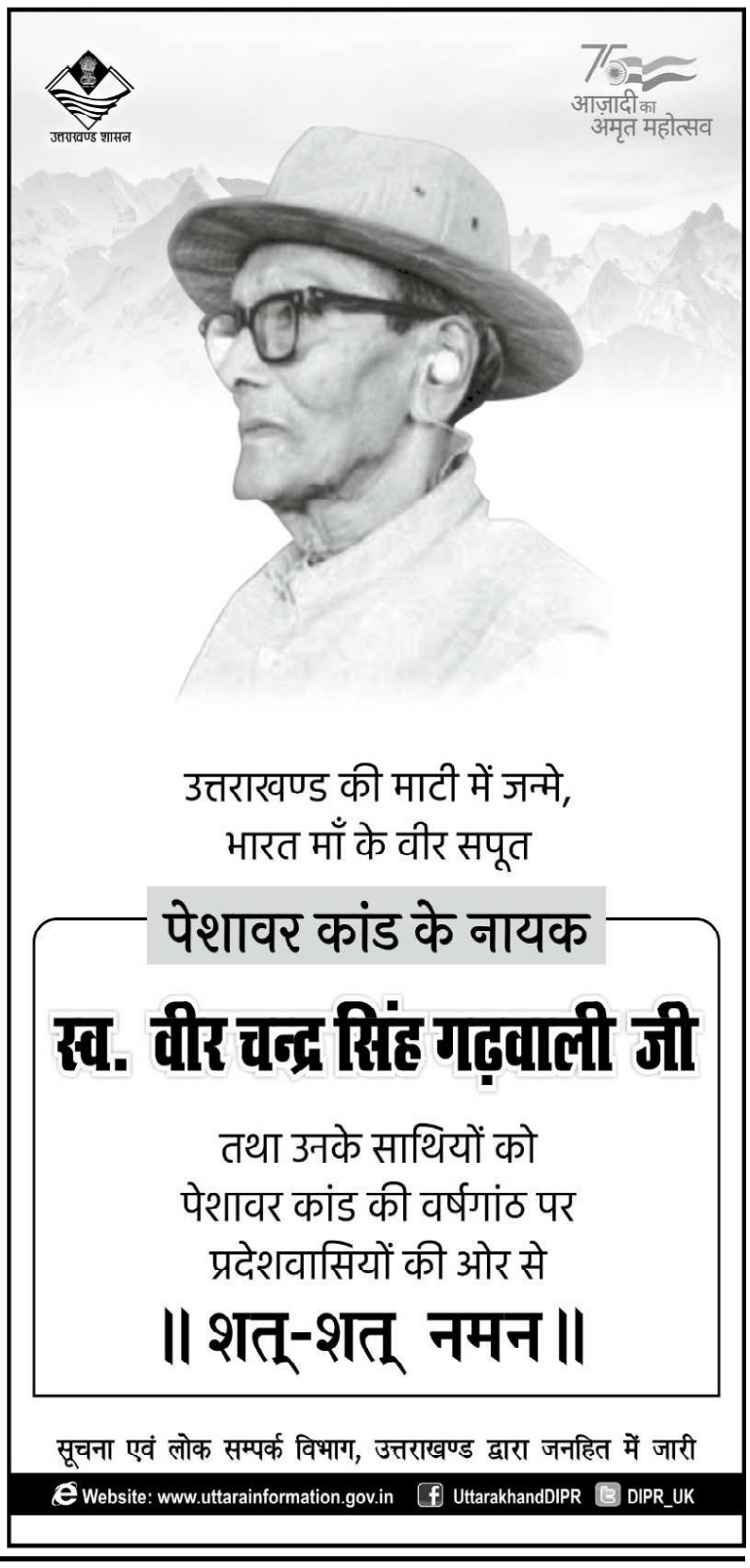

शिक्षा, साहित्य व संस्कृति

जंगलराज को बदनाम करने वाले यह भूल जाते हैं कि वन्य जीव इंसानों की तरह रक्त पिपासु नहीं होते। गुलदारों व बाघों से पटे घनघोर बियाबान जंगल में फंसे दो नन्हें बच्चों को प्रकृति सुरक्षित रख सकती है।

मिथक तोड़ती कहानी-जंगल का कानून

जिम कार्बेट

कालाढूंगी में शुक्रवार के दिन मेला था और उस दिन आसपास के गांवों के सभी लोगों ने बाजार जाने का निश्चय किया, जहां सस्ते भोजन, फल और सब्जियों के प्रदर्शन के लिए खुले बूथ बनाए गए थे। इन मेले के दिनों में हरकुवार और कुंती अपने नियत समय से आधा घंटा पहले काम से लौट आते थे, क्योंकि अगर कुछ सब्जियां बची होतीं तो रात के लिए बूथ बंद होने से पहले उन्हें कम कीमत पर खरीदा जा सकता था।

जब हरकुवार और कुंती मामूली खरीदारी करके झोपड़ी में लौटे, तो उनके बच्चे पुणवा और पुतली उनका स्वागत करने के लिए झोपड़ी में नहीं थे। झोपड़ी में हरकुवार की अपंग माँ से पूछताछ करने पर पता चला कि उसने दोपहर से बच्चों को नहीं देखा है। हरकुवार बाजार में तलाशी के लिए निकल पड़ा, जबकि कुंती शाम का खाना बनाने के लिए झोपड़ी में लौट आई। एक घंटे बाद हरकुवार कई लोगों के साथ लौटा, जिन्होंने बच्चों की खोज में उसकी सहायता की थी, यह रिपोर्ट करने के लिए कि बच्चों का कोई पता नहीं चल पाया है, और जिन लोगों से उसने पूछताछ की थी, उनमें से किसी ने भी उन्हें देखने की बात स्वीकार नहीं की।

गांव के निचले छोर पर एक थाना था। थाने में दो कांस्टेबल औरे एक हेड कांस्टेबल थाने का प्रभारी था। हरकुवार और कुंती ने थाने में आकर हल्ला किया, उनके साथ शुभचिंतकों की बढ़ी भीड़ थी। हेड कांस्टेबल एक दयालु बूढ़ा आदमी था, जिसके खुद के बच्चे थे। उसने विचलित माता-पिता की कहानी को सहानुभूतिपूर्वक सुना और अपनी डायरी में उनके बयान दर्ज किए, हेड कांस्टेबल ने कहा कि उस रात कुछ नहीं किया जा सकता था, लेकिन अगली सुबह वह कालाढूंगी के सभी पंद्रह गांवों में बच्चों के खोने की घोषणा करने के लिए टाउन सियर को भेजेगा।

फिर उन्होंने सुझाव दिया कि यदि नगर वाहक पचास रुपये के इनाम की घोषणा कर सकता है, तो इससे बच्चों की सुरक्षित वापसी में बहुत मदद मिलेगी। पचास रुपये! हरकुवार और कुंती इस सुझाव से भौचक्के रह गए, क्योंकि वे नहीं जानते थे कि सारी दुनिया में इतना धन है। हालांकि, अगली सुबह जब नगर वाहक अपने दौरे पर निकला, तो उसे पता चला कि कालाढूंगी में एक व्यक्ति ने इनाम की धनराशि देने की पेशकश की है और वह इस इनाम की घोषणा कर सकता है। अत: हेड कांस्टेबल के सुझाव पर उसने घोषणा की कि जो कोई बच्चों को खोजकर लाएगा उसे पचास रूपये का इनाम दिया जायेगा।

शनिवार की सुबह वे प्रधान आरक्षक को अपना फैसला बताने थाने गए और उन्हें हल्द्वानी व रामनगर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराने का निर्देश दिया गया। उन्हें बहुत खुशी हुई जब हेड कांस्टेबल ने उन्हें बताया कि वह हल्द्वानी में पुलिस इंस्पेक्टर को किसी व्यक्ति मेल रनर द्वारा एक पत्र भेज रहे थे, जिसमें बच्चों की तलाश के लिए सभी रेलवे जंक्शनों पर टेलीग्राफ करने का अनुरोध किया गया था। जिसका विवरण वह अपने पत्र के साथ भेज रहा था।

कुंती खुद भी बच्चों को खोजने व उनके खोने की रिपोर्ट लिखाने पैदल ही हल्द्वानी के लिए निकल गई और शाम सूर्यास्त के करीब अपनी अट्ठाईस मील की पैदल यात्रा से हल्द्वानी से लौटी और अपने बच्चों के बारे में पूछताछ करने और हेड कांस्टेबल को यह बताने के लिए सीधे पुलिस स्टेशन गई कि उसकी खोज बेकार रही, उसने निर्देश के अनुसार हल्द्वानी थाने में रिपोर्ट दर्ज करा दी थी।

कुछ ही समय बाद हरकुवार अपनी छत्तीस मील की पैदल यात्रा से रामनगर से लौटा, और वह भी पूछताछ करने और रिपोर्ट करने के लिए सीधे पुलिस स्टेशन गया कि उसे बच्चों का कोई पता नहीं चला है, लेकिन उसने हेड कांस्टेबल के निर्देशों का पालन किया था। हरकुवार और पुनवा की माँ के लिए अपनी सहानुभूति व्यक्त करने के लिए उनके कई दोस्त, जिनमें कई माताएँ भी शामिल थीं, जिन्हें अपने बच्चों की सुरक्षा का डर था, झोपड़ी पर उनका इंतजार कर रही थीं।

रविवार भी शनिवार की तरह ही गुजरा, इस अंतर के साथ कि कुंती बच्चों की खोज में पूर्व और पश्चिम की ओर जाने के बजाय उत्तर में नैनीताल चली गई, जबकि हरकुवार दक्षिण की ओर बाजपुर गया। कुंती ने तीस मील की दूरी तय की, और हरकुवार ने बत्तीस। बच्चों को ढूढ़ते हुए वे घने जंगलों में गए जहाँ आमतौर पर लोग अकेले नहीं जाते। रात होने से पहले वापस लौट कर आ सकें इसके लिए दोनों सुबह बहुत जल्दी ही निकल गए। बच्चों की चिंता लगातार बढ़ रही थी। डर था की जंगली जानवर या डकैत बच्चों को कोई नुकसान न पंहुचा दें।

उस रविवार की शाम को, थके और भूखे, वे नैनीताल और बाजपुर की अपनी निरर्थक यात्रा से अपनी झोपड़ी में लौट आए, जहां उन्हें यह खबर मिली कि शहर के मुसाफिरों ने गांवों का दौरा किया और पुलिस पूछताछ में कोई निशान नहीं मिला। बच्चों का कोई पता गहीं चला। तब वे निराश हो गए और उन्होंने पुनवा और पुतली को फिर कभी देखने की सारी आशा छोड़ दी।

सोमवार की सुबह दोनों बहुत मायूस उठे अब न तो कही जाने की ताकत थी न बच्चों के मिलने की कोई आशा। दो दिनों से काम पर नहीं गए थे तो राशन भी कहाँ से आये। दोनों गहरी निराशा में डूबे थे। उनके पास न तो खाना था और न ही तब तक होगा जब तक वे काम पर वापस नहीं आ जाते। लेकिन अब काम करने का क्या फायदा, जब वे बच्चे जिनके लिए उन्होंने सुबह से रात तक कड़ी मेहनत की थी, चले गए? दोस्त आए और चले गए, वे सहानुभूति ही दे सकते थे, दोनों झोपड़ी के दरवाजे पर बैठे हुए एक अंधकारमय और निराशाजनक भविष्य की ओर देख रहे थे, जबकि कुंती के रो-रो कर आँसू भी सूख गए थे, एक कोने में बैठी, घंटे-घंटे, रोती रही।

उस सोमवार को मेरे परिचित का एक आदमी जंगल में भैंसों को चरा रहा था, जिस जंगल में वे जंगली जानवर और पक्षी रहते थे जिनका मैंने उल्लेख किया है। वह एक साधारण आत्मा थे, जिन्होंने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा पाताबपुर गाँव के मुखिया की भैंसों को चराने के लिए जंगलों में बिताया था। वह बाघों से खतरे को जानते थे, और सूर्यास्त के करीब उसने भैंसों को इकट्ठा किया और उन्हें जंगल के सबसे घने हिस्से के माध्यम से चलने वाले एक मवेशी ट्रैक के साथ गांव में ले जाना शुरू कर दिया ।

उन्होंने देखा कि जैसे ही प्रत्येक भैंस ट्रैक में एक निश्चित स्थान पर पहुंचती है, वह अपना सिर दाईं ओर घुमाती है और रुक जाती है, जब तक कि दूसरे जानवर द्वारा सींगों से चलने का आग्रह नहीं किया जाता। जब वह इस स्थान पर पहुंचे तो उन्होंने अपना सिर भी दाहिनी ओर मोड़ लिया, और ट्रैक से कुछ फीट की दूरी पर दो छोटे बच्चों को देखा। ये वो लापता बच्चे थे जिनके लिए पचास रुपये का इनाम रखा गया था।

लेकिन उनकी हत्या करके इस दुर्गम स्थान पर क्यों लाया गया होगा? बच्चे नग्न थे और एक-दूसरे की बाहों में जकड़े हुए थे। चरवाहा अवसाद में उतर गया और यह निर्धारित करने के लिए कि क्या वह कर सकता है, बच्चों की मौत कैसे हुई होगी, यह निर्धारित करने के लिए बच्चों के नजदीक पहुँच कर बैठ गया। उसे यकीन हो गया था कि बच्चे मर चुके हैं, लेकिन अब जब वह करीब से बैठकर उनकी जांच कर रहा था तो उसने अचानक देखा कि वे सांस ले रहे थे। वास्तव में बच्चे मरे नहीं थे, परन्तु गहरी नींद में थे।

वह स्वयं एक पिता था, उसने बहुत कोमलता से बच्चों को छुआ और उन्हें जगाया। उन्हें छूना उसकी जाति के खिलाफ अपराध था, क्योंकि वह एक ब्राह्मण था और वे दलित जाति के बच्चे थे, लेकिन इस तरह की आपात स्थिति में जाति क्या मायने रखती है? इसलिए, अपनी भैंसों को अपने घर का रास्ता खोजने के लिए छोड़कर, उन्होंने उन बच्चों को उठाया, जो चलने में बहुत कमजोर थे, और प्रत्येक कंधे पर एक बच्चे को रखकर कालाढूंगी बाजार के लिए निकल पड़े। वह आदमी खुद भी इतना मजबूत नहीं था, क्योंकि तलहटी में रहने वाले सभी लोगों की तरह वह भी मलेरिया से बहुत पीड़ित था।

उन्हें बच्चे कंधे पर एक अजीब बोझ की तरह लग रहे थे और उन्हें बड़े ध्यान से रखना पड़ रहा था। इसके अलावा, इस जंगल में सभी मवेशियों के रास्ते और खेत के रास्ते उत्तर से दक्षिण की ओर चलते हैं, और उसका रास्ता पूर्व से पश्चिम की ओर है, उसे अभेद्य घने और गहरे खड्डों से बचने के लिए बार-बार चक्कर लगाने पड़ते थे। लेकिन वह अपनी छह मील की पैदल यात्रा के दौरान बीच-बीच में आराम करते हुए मर्दाना तरीके से आगे बढ़ता गया। पुतली तो बोल नहीं सकती थी, लेकिन पुनवा जरा-सी बात कर पाता था और उनके जंगल में होने की जो व्याख्या वह दे सकता था, वह यह थी कि वे खेल रहे थे और खो गए थे।

हरकुवार अपनी झोंपड़ी के दरवाजे पर बैठा घोर अँधेरी रात को देख रहा था, जिसमें रोशनी के बिंदु नजर आने लगे थे, जैसे लालटेन या खाना पकाने की आग यहाँ-वहाँ जल रही हो, तभी उसने देखा कि लोगों की एक छोटी-सी भीड़ सामने की ओर से आती दिखाई दे रही है। जुलूस के आगे एक आदमी अपने कंधों पर कुछ लेकर चल रहा था। जुलूस में चारों ओर से लोग उमड़ रहे थे और उसे बच्चों की एक उत्तेजित फुसफुसाहट सुनाई दे रही थी।

हरकुवार के बच्चे। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था, फिर भी ऐसा प्रतीत हुआ कि कोई गलती नहीं है, क्योंकि बारात सीधे उसकी कुटिया की ओर आ रही थी। कुन्ती अपनी दुर्दशा और शारीरिक सहनशक्ति की सीमा तक पहुंचकर झोंपड़ी के एक कोने में दुबक कर सो गई थी। हरकुवार ने उसे झकझोर कर जगाया और दरवाजे तक ले गया, तभी पुनवा और पुतली को लाने वाला चरवाहा उसके पास पहुँचा।

कुंती और हरकुवार बच्चों को देख कर रोने लगे और चरवाहे का जी जान से धन्यवाद करने लगे। उनको समझ ही नहीं आता था कि चरवाहे का धन्यवाद किस तरह किया जाय। बधाई देने वालों का ताँता लग गया। सब तरफ खबर फैली की बच्चे मिल गए हैं। जिसने सुना वही झोपड़ी की तरफ निकल पड़ा।

अब सवाल था इनाम का। एक गरीब आदमी के लिए पचास रुपये दौलत थे, इनाम इतना था की चरवाहा कम से काम तीन भैंस या दस गाय खरीद सकता था और जीवन भर के लिए स्वतंत्र हो सकता था। लेकिन चरवाहा एक बेहतर आदमी था, उसने कहा कि उस रात उसके सिर पर जो आशीर्वाद और धन्यवाद बरसा था, वह उनके लिए काफी इनाम था, और चरवाहे ने पचास रुपये की एक पाई को छूने से भी दृढ़ता से इनकार कर दिया। हरकुवार या कुंती भी पुरस्कार को उपहार या ऋण के रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं हुऐ। वे उन बच्चों को वापस पा चुके थे जिन्हें वे फिर कभी देखने की सारी उम्मीद खो चुके थे।

दो साल की पुतली और तीन साल का पुनवा शुक्रवार को दोपहर में खो गये थे, और सोमवार को शाम करीब 5 बजे सत्तर घंटे के बाद चरवाहे को मिले। मैंने किताब में उस जंगल के वन्य जीवन का विवरण दिया है जो मेरी जानकारी में जंगल में था। उन वन्य जीवों के साथ बच्चों ने सत्तर घंटे बिताए थे, और यह मान लेना अनुचित होगा कि किसी भी जानवर या पक्षी ने बच्चों को देखा, सुना या सूंघा नहीं होगा और फिर भी, जब चरवाहे ने पुतली और पुनवा को उनके माता-पिता की बाहों में डाला, तो उन पर दाँत या पंजे का एक भी निशान नहीं था। यही जंगल का कानून है।

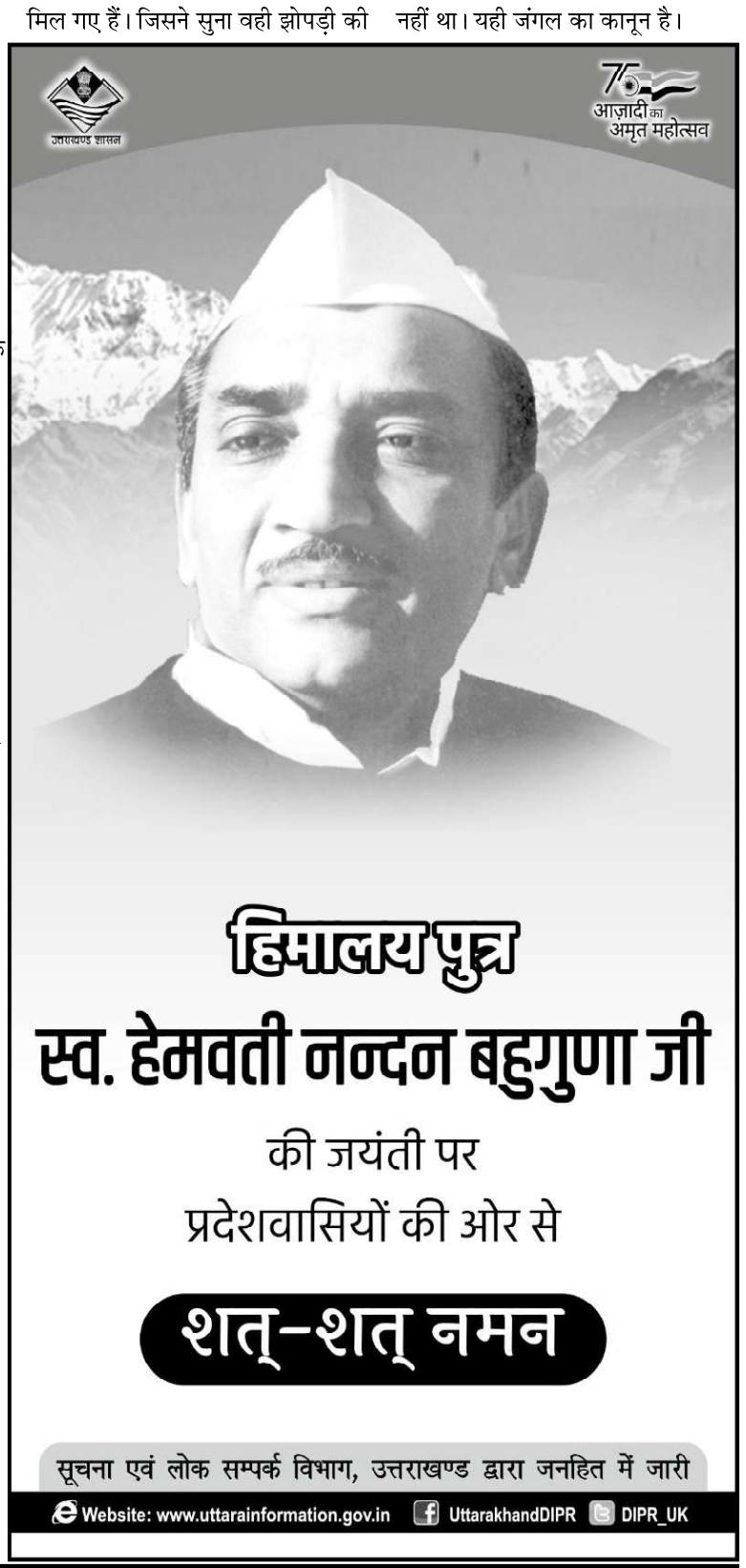

हमारा स्वास्थ

गर्मी के मौसम में ध्यान रखें छोटी-छोटी बातें

वैसे तो हर मौसम की शुरुआत में कुछ न कुछ परेशानियां आती हैं लेकिन, गर्मी के मौसम में खास ख्याल रखना होता है। गर्मी सेहत से जुड़ी कई समस्याएं लेकर आती है, जिसमें डाइजेशन बिगड़ने से लेकर डिहाइड्रेशन तक शामिल है। अगर इस दौरान कुछ छोटी- छोटी बातों का ध्यान रखा जाए तो इन परेशानियों से बचा जा सकता है।

गर्मी के मौसम में इस बात का खास ख्याल रखना चाहिए कि आप सीधे धूप के संपर्क में न आए। दिन के सबसे गर्म समय दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे के बीच अगर जरूरी न हो तो बाहर न निकलें। आपको इस बात का भी ख्याल रखना चाहिए कि आप समय पर खाना खाएं और डाइट में पोषक तत्वों से भरपूर चीजें शामिल करें। धूप में अगर बाहर निकल भी रहें है तो टोपी पहनकर या छतरी लेकर ही बाहर निकलें। चक्कर आना, सिरदर्द, उल्टी जैसी परेशानी होने पर तुरंत डॉक्टर की सलाह लें। गर्मियों में लू लगने का खतरा बहुत रहता है, इसलिए खाने में कच्चा प्याज जरूर शामिल करें। आप अपनी डाइट में आम पन्ना, लस्सी, बेल का शर्बत, पुदीने की चटनी जैसी चीजों को शामिल करें।

खूब पानी पिएं। गर्मी और पसीना आपके शरीर को निर्जलित कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप बुखार और ठंड लगना जैसे प्रतिकूल स्वास्थ्य परिणाम हो सकते हैं। खुद को हाइड्रेटेड रखने के लिए रोजाना कम से कम 2 से 3 लीटर पानी पिएं।

हीटस्ट्रोक से बचने के लिए सावधानी बरतें। गर्मी के महीनों के दौरान एक और बड़ी समस्या हीटस्ट्रोक है। बड़े व वयस्क इसके प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, क्योंकि उनके शरीर तापमान परिवर्तन को जल्दी से समायोजित नहीं करते हैं। तेज बुखार, मतली, उल्टी, सिरदर्द और चक्कर आना ये सभी हीटस्ट्रोक के सामान्य लक्षण हैं।

शराब और कैफीन से बचें। शराब और कॉफी ये सभी आपको जल्दी से निर्जलित कर सकते हैं। विशेष रूप से गर्म मौसम के दौरान, इन पेय पदार्थों के सेवन को सीमित करने का प्रयास करें। एक अच्छा विकल्प सादा पानी है।

स्वस्थ और हल्का भोजन करें। उच्च कार्बोहाइड्रेट और वसा वाले भारी भोजन से शरीर में बहुत अधिक गर्मी उत्पन्न होती है। उच्च पानी की मात्रा वाले ताजे फल और सब्जियों पर ध्यान दें, जैसे संतरे, तरबूज, टमाटर आदि।

बासी खाना बिलकुल भी न खाएं। गर्मियों में आपकों अपने खाने पीने का अच्छे से ख्याल रखना चाहिए, ज्यादा तला भुना और मसालेदार खाना खाने को अवॉयड करें। ऐसी चीजों का सेवन करें जिससे आपके शरीर को ठंडक मिले और शरीर को हाइड्रेट रखें।

बच्चों का विशेष ध्यान रखें। गर्मियों में बच्चों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। उनकी स्किन बहुत नाजुक होती है, उन्हें धूप से बचाने के लिए टी-शर्ट, सूती और ढीले कपड़े पहनाकर रहें। सूती कपड़े उन्हें ठंडक पहुंचाते है। साथ मे इस बात की भी ध्यान रखें कि बच्चों को हल्के रंग के कपड़े पहनाएं।

गर्मी के मौसम में स्वस्थ रहने के लिए यह आवश्यक है कि प्रात:काल घूमने जाएँ। गर्मी के दिनों में स्वास्थ्य बिगड़ने में देर नहीं लगती है। सूर्योदय से पहले उठकर शुद्ध वायु के सेवन के लिए घूमना अत्यंत आवश्यक है।

बीज, मिट्टी व पौष्टिक अनाज पर सेमिनार

✍प्रेम पंचोली

अन्तर्राष्ट्रीय बीज दिवस के अवसर पर माउंट वैली डेवलपमेंट एसोसियशन और ग्राफिक एरा हिल विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधन में परम्परागत कृषि और जैव विविधता विषय को लेकर दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस दौरान किसानों, महिलाओं, शोधकर्ताओं, छात्रो, उद्यमियों और उपभोक्ताओं सहित अनेक हितधारको ने एक दूसरे से सीखने, टिकाउ एवं सतत कृषि के लिए नये-नये नवाचरो के आदान-प्रदान पर वृहद चर्चा हुई। विशेषज्ञो ने कहा कि स्वस्थ स्वास्थ्य के लिए मडुआ, कौणी, झंगोरा ही आज की आवश्यकता है। इसलिए हिमायल जैसे राज्यों में प्रकृति आधारित और परम्परागत कृषि को बढावा दिया जाना चाहिए। मिलेट्स वर्ष में इस कार्य को तेजी से बढ़ाया जाना चाहिए।

दो दिवसीय सेमिनार के दौरान चर्चा के मुख्य बिंदुओ में परम्परागत बीज, कृषि, जैव विविधता को बढ़ाना, जलवायु के अनकूल फसलो को उगाना, मिट्टी सहित प्राकृतिक संसाधनो के सामजस्य व उत्पादकता को बढाने पर विचार विर्मश किया गया है। सेमिनार में महिला किसानों ने कहा कि उतराखण्ड में कृषि की जमीन तेजी से बिक रही है। यह बात भी खुलकर सामने आई कि परम्परागत बीज ही परम्परागत खेती और मोटे अनाज को विकसित करने और उत्पादकता बढ़ाने के लिए आवश्यक है।

इस अवसर पर बीज बचाओ आन्दोलन के विजय जड़धारी ने कहा कि आज मोटे अनाजों के संरक्षण की आवश्यकता है। दुनिया भर में मोटे अनाज को बचाने के लिए लोग आगे आ रहे हैं। स्वस्थ स्वास्थ्य के लिए मोटे अनाज का भोजन ही अनिवार्य है। परम्परागत बीज को संरक्षण करने की प्रबल आवश्यकता है। उन्होंने कहा उनके पास उतराखण्ड के सैकड़ो परम्परागत बीज संरक्षित है। मगर सभी के घर में बीज संरक्षित हो तब हम किसी सफलता तक पंहुच पायेंगे। श्री जड़धारी ने कहा कि खेती व्यापार नहीं हमारी संस्कृति हैं। पुराने बीजों को बचाना एक चुनौती है। उन्होंने शंका जाहीर की है कि बीजों के जीनोम में बदलाव करके कंपनियां हमें हाइब्रिड बीजों का गुलाम बना रहीं हैं।

सेमिनार में आई0एम0आई0 की कोषाध्यक्ष बिनीता शाह ने कहा कि उत्तराखंड में मिट्टी, बीज और मिलेट्स का संरक्षण पर्वतीय क्षेत्रों के विकास का आधार है। जरूरत है कि हम मडुवा जैसे एक अनाज पर नहीं बल्की हर तरह की मलेट्स पर ध्यान दें। हिमाचल प्रदेश से आये पद्मश्री नेकराम शर्मा ने कहा कि हिमाचल और उतराखण्ड का भूगोल एक जैसा है इसलिए यहां पर कृषि के लिए सरकारो को खास योजना बनानी चाहिए। उन्होंने कहा कि हिमालय राज्यों की परम्परागत खेती की आज आवश्यकता बढ रही है, यही सुखद है।

इस अवसर पर पद्मश्री कल्याण सिंह रावत ने कहा कि उत्तराखण्ड में प्राकृतिक खेती होती आई है। हरित क्रान्ति के आने के बाद देश में परम्परागत खेती में बिखराव आया है। अब लोगों को फिर से प्राकृतिक खेती की ओर लौटना पड़ेगा। यहीं से मोटे अनाजों के संरक्षण की शुरूआत होगी। ग्राफिक एरा विश्वविद्यालय के एसोसिएट डीन एग्रीकल्चर प्रो0 वाई0 पी0 सिंह, वन्य आर्गेनिक से सुप्रिया, रूद्र एग्रो स्वायत सहकारिता के प्रमुख नरेश नौटियाल, कृषि परामर्शदाता कुलदीप उनियाल, एससीएच कन्सलटिंग के अरविन्द रावत, त्रिशूली प्रड्यूशर कम्पनी की जगदीश जोशी, माउन्ट वैली डेवलपमेंट एसोसियशन के संस्थापक अवतार सिंह नेगी, श्रमयोग संस्था के अजय कुमार, पी0एसआई0 के पूरण बर्त्वाल, डा0 विनोद भट्ट आदि विशेषज्ञो ने अपने विचार व्यक्त किये।

समापन सत्र में बोलते हुए माउंटवेली डेवलपमेंट ऐशोसियशन के समन्वयक नवप्रभात ने कहा कि बीज हमारी सांस्कृतिक विरासत है। इसे बचाने के लिए हम सभी को मिलकर परंपरागत बीज सरंक्षण के लिए अपने-अपने स्तर पर कार्य करना होगा। साथ ही समुदाय व विभिन्न हितधाराको के लिए आवश्यक सुविधा बढ़ाने में संयुक्त प्रयास करने होंगे। विश्वविद्यालय के प्रो. चांसलर डॉ. जे. कुमार ने कहा कि ग्राफिक एरा हिल यूनिवर्सिटी में 2017 में शुरू हुआ स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च किसानों की समस्याओं के समाधान ढूंढने का काम भी करता आया है। कृषि के क्षेत्र में स्टार्टअप्स की जरूरत है। उत्तराखंड की पारंपरिक बारहनाजा कृषि पद्वत्ति के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वज मिट्टी की फर्टिलिटी की अहमियत जानते थे। हमें इस धरोहर को आगे ले जाना है। सेमिनार में विश्वविद्यालय के डायरेक्टर जनरल डॉ. एच0 एन0 नागराजा व वाइस चांसलर डॉ0 आर0 गौरी भी उपस्थित रहे। सेमीनार का संचालन शंकर दत्त ने किया है।

इस अवसर पर विभिन्न किसानों द्वारा स्थानीय उत्पादों की प्रदर्शनी, क्रेता, विक्रेताओ का आपसी मेल, फील्ड स्तर पर किये गये अध्ययनों का प्रस्तुतिकरण, बीजों की प्रदर्शनी व स्थानीय व्यंजनो की प्रदर्शनी आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। सेमिनार में देशभर के कृषि वैज्ञानिक, परंपरागत खेती के जानकर और अन्य हितधारी सम्मिलित हुए है।

पर्वतीय विकास की सही दिशा गोष्ठी सम्पन्न

अनासक्ति आश्रम कौसानी में 5-7 अप्रैल 2023, पर्वतीय विकास की सही दिशा विषय पर तीन दिवसीय संवाद गोष्ठी का आयोजन किया गया। स्व0 सरला बहिन के जन्म दिन 5 अप्रैल के अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में उनके नेतृत्व में तैयार 'पर्वतीय विकास की सही दिशा' नाम की पुस्तिका को केन्द्र में रख चर्चाएं की गई। वक्ताओं ने कहा कि इस पुस्तिका में सरला बहन से पर्वतीय क्षेत्रों के विकास का ब्यौरा हमारे सामने रखा है। इस पर आगे बढ़ने की आवश्यक्ता है।

वक्ताओं ने कहा-पृथक राज्य बनने जैसी महत्वपूर्ण घटना के बाद भी पहाड़ को लेकर हमारी अपेक्षाऐं पूरी नहीं हो पाई हैं। पहाड के विकास की चुनौतियां आज भी हमारे सामने खड़ी हैं। संवाद गोष्ठी के अन्तिम दिन भावी कार्यक्रमों से सम्बंधित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये।

प्रस्तावों में कहा गया कि प्राकृतिक लूट व विनाश रूपी विकास की योजनाओं का बहिष्कार किया जायेगा, भू-कानून व वन पंचायतों को लेकर वर्षों से संघर्ष कर रही जनता की मांग को सरकार स्वीकार करे, इस हेतु अभियान चलाया जायेगा, गाँधी-विनोबा के विचार पर सृजित समस्त संस्थाओं के पुनरुत्थान और पुनर्जीवन के लिए प्रयास किया जायेगा, पर्वतीय विकास की सही दिशा पर टनकपुर से त्यूणी तक प्रस्तावित पदयात्रा को समर्थन रहेगा, 1 मई को टिहरी गढ़वाल और 14 मई, 2023 को हल्द्वानी में संविधान, लोकतंत्र व भारत जोड़ो के संदर्भ में संवाद आयोजित किये जायेंगे व 25 जुलाई, 2023 को नई टिहरी में उत्तराखंड सर्वोदय मंडल की बैठक की जायेगी।

भारत रत्न बाबा साहेब आंबेडकर को याद किया

✍बची सिंह बिष्ट

भारत रत्न बाबा साहेब आंबेडकर जी के जन्म दिवस पर उत्तराखंड सर्वोदय मंडल द्वारा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता उत्तराखंड सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष इस्लाम हुसैन और संचालन नैनीताल सर्वोदय मंडल के संयोजक बची सिंह बिष्ट ने किया।

बैठक में वक्ताओं ने कहा कि बाबा साहेब आंबेडकर की महत्वपूर्ण भूमिका के साथ बने भारतीय संविधान ने भारत को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र बनाया और एक राष्ट्र राज्य के रूप में संगठित किया। संविधान ने विभिन्न भाषा, वेशभूषा, खान-पान, विचार, विश्वास के लोगों को समानता, स्वतंत्रता, न्याय और प्रगति के अवसर प्रदान किये। भारतीय समाज बहुलतावादी है। जिसके विविध स्वरूप में एकता के भाव को संविधान ने मजबूती प्रदान की है। कोई भी पार्टी और सरकार संविधान से ऊपर नहीं है। आज दुनिया के वे तमाम देश जिनके पास यह संवैधानिक व्यवस्था और लोकतंत्र नहीं है, ऐसे संविधान की सिर्फअपने यहां होने की कामना करते हैं।

वक्ताओं ने कहा कि संविधान को बनाने के पीछे आजादी के संघर्ष का लंबा अनुभव, त्याग और विभाजन की पीड़ा भी शामिल है, जो हाशिए में रहने वाले प्रत्येक नागरिक को समता के अवसर प्रदान कर उसको समान मानवीय गरिमा के साथ बराबरी का दर्जा देने के लिए प्रतिबद्ध करता है। निश्चित ही बाबा साहेब अंबेडकर जी की बुद्धिमत्ता, त्याग और अनुभव का उसमें समावेश है। संविधान से यदि कोई छेड़छाड़ होती है, अथवा कोई भी व्यक्ति या संगठन संविधान की मूल भावना का अनादर करता है तो वह निश्चित रूप से देश का अपमान करता है। भारतीय संविधान ही भारतीय नागरिकों की प्रथम पुस्तक है, जो उनको सच्चे लोकतंत्र का पाठ पढ़ाती है और उसमें अंतिम व्यक्ति को भी समान निर्णय, विचार और प्रगति का अवसर प्रदान करती है।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए उत्तराखंड सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष इस्लाम हुसैन ने कहा कि भारतीय जनता ने संविधान के आलोक में अपने को अधिक जागरूक, जिम्मेदार समता मूलक और जवाबदेह बनाया है। लेकिन निहित स्वार्थों की वजह से कुछ माहौल ऐसा बनाया जा रहा है जैसे देश में प्रत्येक गलत कार्य के लिए संविधान ही जिम्मेदार हो, और कुछ लोग अपने हितों के लिए उसको बदलने की बात भी करने लगे हैं। डाक्टर भीमराव अंबेडकर जी ने हमेशा कहा कि संविधान बेहतरीन है। यदि अच्छे लोग सत्तासीन होंगे तो यह और अधिक बेहतर परिणाम देगा और बुरी नियत के लोग इसका गलत फायदा उठाकर इसे गलत साबित कर सकते हैं।

बैठक में अनिल कार्की, राजेंद्र क्वीरा, यतीश पंत, मदन मेर, पूरन बिष्ट, सुनील चन्याल, पी सी तिवारी, रीता इस्लाम, उमेश तिवारी, लक्ष्मण सिंह मेवाड़ी, जगमोहन रौतेला, कैलाश चंदोला, राजेंद्र जोशी, प्रदीप कोठारी, एवम अन्य युवा शामिल रहे। जय जगत पुकारे जा नारे के साथ बैठक का समापन किया गया।

बैशाखी का मेला और हमारा जत्था

✍राकेश

15 अप्रैल को मानिला में बैशाखी का मेला लगा। जिसमें श्रमयोग टीम द्वारा श्रम-उत्पाद एंव किताबों का स्टॉल लगाया गया। ग्रामीणों ने बताया कि मेले में आज तक के इतिहास में पहली बार किताबों का स्टॉल लगा था, जो अब हर वर्ष लगाया जाएगा। उसके बाद मेले में जत्था निकाला गया, अनेक जनगीतों से सड़कें, दुकानें गूँजने लगी थीं ''लड़ना है भाई ये तो लंबी लड़ाई है'' में लोगों के भी सुर मिलने लगे थे। हमारे साथी हाथों में चार्ट लिए थे जिसमें जंगली जानवरों का पक्ष और मंच की मांगे लिखी थीं। रैली के बाद नुक्कड़ नाटक किया गया, लोगों ने इस जागरुकता जत्थे की खूब सराहना की। रथखाल बाजार में जागरुकता जत्था 22 अप्रैल को 10 बजे पहुँचा जिसमें कुणीधार, रथखाल, सकनड़ा, सिमली हित, मंशुबाखली, छिड़गा के स्वयं सहायता समूहों की सदस्याएं एंव ग्रामीण शामिल रहे। दोपहर 3 बजे जत्था रथखाल बाजार पहुँचा जिसमें झिमार, मल्ला बिरलगांव, देशवाल बाखली, धतुरिखत्ता के स्वयं सहायता समूह की सदस्याएं एंव ग्रामीणों ने भाग लिया।

23 अप्रैल को पीपना प्राथमिक स्कूल के सामने जत्था पहुँचा जिसमें रामपुर, पीपना, झीपा, कुक्लयाल बाखली, पौराबाखली, दाड़मी, पल्लीगांव, चौधरू, के स्वयं सहायता समूह की सदस्याएं एंव ग्रामीणों ने भाग लिया उसके बाद दोपहर 3 बजे जत्था चांच पहुँचा जिसमें इजराल चांच, बिचला चांच, कफल्टा, निसणकुटिया, डौठापानी, बिरलगांव तल्ला, कालीगाड़ के स्वयं सहायता समूह की सदस्याएं एंव ग्रामीणों ने भाग लिया। 24 को जागरुकता जत्था पैसिया पहुँचा जिसमें गेठिया, नैकड़ा के स्वयं सहायता समूह की सदस्याएं और ग्रामीणों ने भाग लिया। मांग पत्र में लगातार हस्ताक्षर हो रहे हैं। लोगों के साथ-साथ दुकानदार आर्थिक सहयोग कर रहे हैं। दुकानदारों का कहना है कि पहली बार हम जानवरों का पक्ष भी समझ रहे हैं, रचनात्मक महिला मंच और श्रमयोग की यह एक अच्छी पहल है इसमें हमारा सहयोग हमेशा रहेगा।

जत्था लगातार चल रहा है। जब तक मंच द्वारा रखी गयी मांगों को लेकर सरकार कोई फैसला नहीं ले लेती तब तक जत्था चलता रहेगा।

खबरें कार्य क्षेत्र से

श्रमयोग संस्थान सोसायटी पंजीकरण एक्ट के तहत पंजीकृत एक जन संस्थान है। श्रमयोग के द्वारा उत्तराखण्ड राज्य व देश के अलग-अलग हिस्सों में जन समुदायों के साथ मिलकर विकासात्मक गतिविधियों को अन्जाम दिया जाता है। यहाँ श्रमयोग के कार्य क्षेत्र की खबरें दी जा रही है। बच्चे अपने क्षेत्र में बदलते तापमान पर नजर रख रहे हैं। यहां उनकी अभिव्यक्ति को स्थान दिया जा रहा है। - सम्पादक

कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट

नैनीडांडा क्लस्टर
आसना

इस माह नैनीडांडा क्लस्टर में रचनात्मक महिला मंच की त्रैमासिक बैठक की गई। जिसमें सभी समूह के सदस्यों ने प्रतिभाग किया। समूह की सभी महिलाएं बैठक में उपस्थित थी। रचनात्मक महिला मंच सल्ट की बैठक से जो मुद्दे निकल कर आए थे उन्हीं बातों को गढ़वाल की बहनों के सामने रखा गया। जिस तरह से जंगली जानवरों का आतंक बढ़ रहा है उससे महिलाएं परेशान हैं। आए दिन गांव से पालतू पशु जैसे गाय, बैल, बकरी के मारे जाने की खबरें महिलाओं द्वारा बैठक मैं सुनाई जाती हैं। रिखणीखाल की खबर सुनकर तो महिलाएं थोड़ा और चिंता में आई। बाघ का आतंक बढ़ रहा है। स्कूल में बच्चों को भेजे तो चिंता लगी रहती है, अब एक व्यक्ति बच्चों को लाने व ले जाने के लिए चाहिए। ऐसे में बच्चों की शिक्षा पर असर हो रहा है।

जानवरों के हमले से परेशान महिलाएं जागरूकता जत्था कर रही हैं, जिसमें नुक्कड़ नाटक और जन गीत के माध्यम से जानवरों का पक्ष भी दिखाया जा रहा है। नुक्कड़ नाटक के द्वारा इंसानों द्वारा जो गलतियां हुई हैं, जानवर उसे सुधारने की बात कर रहे हैं। जानवर और इंसान दोनों ही अपनी मांगो की बात कर रहे हैं।

अभी जत्था कुमाऊं के गांव में ही चल रहा है परंतु जल्दी गढ़वाल में भी जत्था पहुंचेगा। वहां की महिलाएं इसका बेसब्री से इंतजार कर रही हैं। रचनात्मक महिला मंच ने हल्दी की खरीद शुरू कर दी है। सदस्य आजकल अपने खेतों से मिर्च की गुड़ाई कर रहे हैं। रचनात्मक महिला मंच नैनीडांडा का क्षेत्र अभी ज्यादा बड़ा नहीं है अध्यक्षा का कहना था कि हमें अपने क्षेत्र का विस्तार करना होगा ताकि हमारा संगठन और बड़ा और मजबूत हो।

झीमार एंव रथखाल क्लस्टर
रेनुका

कलस्टर में हल्दी का एकत्रिकरण शुरू हो गया है, और साथ-साथ अजवाइन की खेती के लिए महिलाओं से चर्चा की जा रही है। थोड़ी बारिश होने से मिर्च के किसानों को राहत मिली, वहीं गेहूँ के किसानों को नुकसान झेलना पड़ा। गेहूँ के सीजन में बारिश न होने के कारण सल्ट में इस बाद सरसों का उत्पादन घट गया। अब फिर से मिर्च की पौध सूखने लगी है, किसानों को फिर से बारिश की आस है। सगवाड़ों में बीन्स, ओगल, धनिया, और बेल होने लगी हैं, आजकल सदस्याएं खेतों से लहसुन निकाल रही हैं। दाड़मी में सगवाडों की अब अच्छी संख्या हो गयी है। बीज कोष जमा किया गया तथा श्रमयोग पत्र पढ़ा गया और अपने पत्र में सभी को लिखने के लिए प्ररित किया गया।

चाँच एवं झीपा क्लस्टर
राकेश

इस माह की बैठकें काफी महत्वपूर्ण रही, बैठकों की शुरूआत इस बार रचनात्मक महिला मंच की त्रैमासिक बैठक से की गयी, उससे पहले श्रमयोग टीम ने अपना मंथन कार्यक्रम इस बार देहरादून में किया जो 26 मार्च से 30 मार्च तक चला। रचनात्मक महिला मंच की बैठक में कई अहम फैसले लिए गये, जिसमें यह भी तय हुआ कि बढ़ते मानव वन्य-जीव संघर्ष को लेकर मंच को जागरुकता जत्था निकालना है, जिसमें नुक्कड़ नाटकों के द्वारा इसे समझने का प्रयास और समाज को जागरुक किया जाएगा, साथ-साथ एक मांग पत्र तैयार कर सरकार को सौंपा जाएगा। मंच ने इस बार हल्दी का मूल्य 85 रुपये प्रतिकिलो तय किया है। बैठक में मंच की अध्यक्षा श्रीमती निर्मला देवी जी ने कहा कि, हमें और मेहनत से कार्य करने की आवश्यकता है, हम सभी लोग जंगली जानवरों के आतंक से परेशान हैं, इस बढ़ती परेशानी का हल खोजना होगा। सरकार से फ्लिहल कोई उम्मीद नहीं दिख रही। संघर्ष करना होगा।

2 अप्रैल को पल्लीगांव और मल्ला बिरलगांव में बैठक की गयी, जिसमें इस बार किशोरियों के साथ मिलकर कुछ कार्य करने की बात कही गयी, महिलाओं ने कहा कि हमें यह महसूस होता है कि किशोरियों का भी एक संगठन होना चाहिए जहां वे अपनी बातों को रख पाएं। इस बार की बैठकों में श्रमयोग की विचारधारा एंव अभियानों पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गयी, तथा महिलाओं को जागरुकता जत्थे के विषय में बताया गया। महिलाओं ने जत्थे के लिए आर्थिक सहयोग किया।

रामपुर एंव नैकड़ा में इस बार महिलाओं के स्वास्थ की जाँच की गयी जिसमें उनका बी0पी0, शुगर तथा वजन नापा गया, तथा स्वास्थ संबंधित चर्चाएं की गयी। गैठिया में इस बार फिर से गैस की गाड़ी गांव तक लाने के लिए पत्र लिखा गया। इस माह डांडा गांव में ग्रमीणों के साथ पहली बैठक आयोजित की गयी जिसमें महिलाओं को अपना स्वयं सहायता समूह बनाने के लिए कहा गया। जिसमें यह तय किया गया कि हर माह 13 तारीख को डांडा गांव में बैठक आयोजित की जाएगी। 20 तारीख को बिरलगांव तल्ला में किशोरियों की पहली बैठक आयोजित की गयी जिसमें किशोरियों का पक्ष को जानने के बाद यह बताया गया कि श्रमयोग किशोरियों के साथ भी काम करना चाहता है। जिसके बाद यह तय हुआ कि हर माह दूसरे रविवार को बिरलगांव में किशोरियों की बैठक आयोजित की जाएगी।

गिंगड़े कलस्टर

इस बार का माह बाघ की कहानियों तथा जागरूकता से भरा हुआ रहा। श्रमयोग के मंथन में की गई बातों तथा निर्णयों को रचनात्मक महिला मंच की त्रैमासिक बैठक में रखा गया, तथा मंच की हामी के बाद श्रमसखी तथा श्रमयोग सदस्यों ने सभी समूह की बैठक में उन बातों को रखा। समूहों के सम्मुख यह बात भी रखी गई कि श्रमयोग एक लोक संस्थान है, तथा सामाजिक पूंजी बढ़ाने के प्रयास को तेज करने पर जोर दिया गया।

मंच ने सदस्यों के बीच बढ़ते हुए मानव-वन्यजीव संघर्ष के लिए जागरूकता जत्था करने की बात रखी गई, जिसमें मंच ने अपनी चार मांगों को रखा जिसमें पहली मांग जंगली जानवर के हमले से होने वाली मनुष्य की मौत का मुआवजा रू0 25 लाख किया जाय। दूसरी मांग जंगली जानवरों के हमले में घायल होने वाले व्यक्ति के इलाज का पूरा खर्च सरकार वहन करे। तीसरी मांग जंगली जानवरों के हमले में मरने वाले खच्चर के लिये मुआवजा रू0 1 लाख, गाय के लिये रू0 50 हजार व बकरी के लिये रू0 20 हजार हो। और चौथी मांग जंगली जानवरों द्वारा फसलों को होने वाले नुकसान का मुआवजा बढ़े तथा उक्त मुआवजे को प्राप्त करने की प्रक्रिया को आसान किया जाय। इन मांगों को लेकर जत्था सबसे पहले रिक्कासी के बद्रीनाथ मंदिर में गया। जहां पर रिक्कासी, काने, मटवास, डयौना के स्वयं सहायता समूह तथा ग्रामीणों ने प्रतिभाग किया तथा मांगपत्र पर हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। सदस्यों ने जत्थे को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग किया, तथा मांगों को लेकर संघर्ष करने के लिए कहा।

समूह में ऋण लेने की प्रक्रिया लगातार चल रही है, लेकिन बाघ की घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। गिगड़े गांव की देवकी देवी जी के बैल को बाघ द्वारा मार दिया गया है, तथा बाघ अब दिन में ही ग्रामीणों को दिखाई देने लगा है। बढ़ती घटनाओं को लेकर बैठकों में लगातार चर्चाएं चल रही हैं।

थला-जमरिया कलस्टर
सुरेन्द्र सिंह

कलस्टर में सभी समूहों के मासिक बैठकों का आयोजन किया गया। बैठकों में श्रमयोग एक लोक संस्थान है यह बताया गया। साथ ही श्रमयोग के तीनों अभियानों पर चर्चा की गयी। पूरे क्लस्टर में श्रमयोग पत्र सदस्यता अभियान चलाया गया। श्रम-उत्पाद हल्दी की खरीद पर चर्चा की गई, खरीद 5 मई तक चलेगी। अप्रैल माह में रचनात्मक महिला मंच द्वारा चलाये जा रहे मानव-वन्यजीव संघर्ष जागरूकता जत्थे में मांग पत्र में हस्ताक्षर किए जा रहे हैं। जिस मांग पत्र में प्रमुख तीन मांगे हैं, जंगली जानवर के हमले से घायल व्यक्ति का इलाज का खर्च सरकार द्वारा उठाया जाए, जंगली जानवरों के हमले में मृत व्यक्ति के परिवार को 25 लाख का मुआवजा दिया जाए, जंगली जानवरों द्वारा मवेशियों के मारे जाने एंव फसलों के नुकसान का मुआवजा दिया जाय।

जमरिया कलस्टर में भी अप्रैल माह की बैठकें तय दिनांक पर ही रहीं। जमरिया कलस्टर में बैठकें 6 तारीख से शुरू हो जाती हैं। बैठकों में महिलाओं को यह बताया गया कि बैठकों में उपस्थिति अनिवार्य है, महिलाओं ने बताया कि जंगली जानवर हमारी साग सब्जियां तो नष्ट कर ही देते हैं, फिर भी हम साग सब्जियां लगाते रहेंगे। इस समय लहसुन प्याज की खेती हो रही है, थोड़ा बंदरों ने खाया और थोड़ा सा हमें भी मिल गया है, यदि हम नहीं बोते तो थोड़ा भी कहां से मिल पाता। हर माह की बैठकों में इसी प्रकार की चर्चाएं होती रहती हैं। बल्युली के सभी स्कूलों जाने वाले बच्चों के परिवारों ने गाँव से पलायन कर लिया है। गांव के गांव खाली हो गए हैं।

जसपुर क्लस्टर
आसना, श्रमयोग

समस्याओं से घिरे हुए लोग जो आज अपनी बातों को रखने के लिए सड़क में उतरे हैं, वे सभी रचनात्मक महिला मंच के सदस्य हैं। मंच मानव-वन्यजीव संघर्ष को लेकर एक जागरूकता जत्था कर रहा है, जत्थे के माध्यम से सदस्य सरकारों तक अपनी मांगों को पहुंचाना चाहते हैं। 12 अप्रैल के दिन जसपुर क्लस्टर की सदस्याएं भी जत्थे में शामिल रहे। लगता है कि रचनात्मक महिला मंच का यह जागरूकता जत्था अभी इतनी जल्दी शांत होने वाला नहीं है। 10 मई के दिन रचनात्मक महिला मंच अपनी मांगों को लेकर एसडीएम के पास जाएगा। इस माह सभी गांव में जागरूकता जत्थे को लेकर चर्चाएं हुई, यह जत्था पूर्ण रूप से जन सहयोग से चल रहा है, जब यह बात सदस्यों को पता चली तो जसपुर और भवाली की सदस्यों ने आर्थिक सहयोग किया। एक तरफ रचनात्मक महिला मंच अपना जागरूकता जत्था कार्यक्रम कर रहा है। दूसरी तरफ अपना समर्थन भी एकत्रित कर रहा है।

आजकल हिनौला ऑफिस में हल्दी एकत्रीकरण का काम चल रहा है महिलाएं बड़ी मेहनत से इसे तैयार कर रही हैं, तैयार करके हिनौला ऑफिस ला रही हैं। जब हम गांव की समस्याओं पर बात कर रहे थे तो मयालबाखली गांव की सदस्याओं ने कहा कि हमारा सड़क से 2 किलोमीटर दूर पड़ता है।यदि कोई बीमार होता है तो उससे बड़ी मुश्किल से कुर्सी से ले जाया जाता है। उन्होंने कहा आपके द्वारा स्ट्रैक्चर तो दिया गया था परंतु हमारा गांव गहराई में है, मरीज को डर होती है उसे तो 4 लोगों ने पकड़ना होता है, और रास्ता इतना कच्चा है कि जिसमें सिर्फ एक व्यक्ति ही चल सकता है ऐसे में स्ट्रैक्चर भी किसी काम का नहीं है, तो मरीज को कुर्सी में बांध के ले जाया जाता है। हमारे यहां जब कोई महिला गर्भवती होती है तो 1 माह पहले ही उसे शहर भेज दिया जाता है। ग्रामीणों ने कहा हम सड़क चाहते हैं पर कैसे आये जहां से सड़क आनी है वहां से दूसरे गांव वालों के खेत आते हैं वो राजी नहीं हैं हम क्या करें गांव में कैसे रहें, थोड़ा बहुत जो कुछ भी क्यारी में होता है तो उसे जानवर नुकसान पहुंचा देते हैं।

महिलाओं से जब अजवाइन की खेती की बात की तो महिलाओं ने दिलचस्पी दिखाई उन्होंने कहा कि प्रयास करेंगे। एक महिला ने कहा मैंने पिछले साल 2 किलो चौरा फेंक दिया था, कोई लेता ही नहीं है। हमें इतने चौरे का क्या करना था, जब गांव वालों को बची कुची फसलों का उचित दाम भी नहीं मिलेगा तो खेती के लिए प्रयास कौन करेगा इन सब बातों के साथ अप्रैल की बैठकें समाप्त हुई।

भ्याड़ी कलस्टर
पंकज

माह अप्रैल की सभी बैठकें तय दिनांक पर की गई। बैठक भ्याड़ी कलस्टर में 3 तारीख से शुरू हो जाती है। बैठकों में महिलाओं को यह बताया गया कि सबसे पहले बैठक में उपस्थिति अनिवार्य है। चर्चा की गई कि बदलते मौसम के साथ-साथ स्वास्थ्य का ध्यान रखना बेहद जरूरी है। महिलाओं ने कहा कि जंगली जानवरों ने हमारे खेती-बाड़ी को तथा और अन्य फसलों को जो नुकसान किया है, उसके विषय में अब एक बहुत बड़ा ठोस कदम लेने की जरूरत है। बीज कोष पर चर्चा कर सभी महिलाओं से बीज का पैसा लिया गया तथा बीज को एकत्रित किया गया। क्षेत्र में लंबे समय से चल रहे मानव वन्यजीव संघर्ष को देखते हुए मंच ने यह तय किया की मर्चुला से मानिला रथखाल तक एक जन जागरूकता जत्था निकाला जाएगा। जत्थे के दौरान टीम श्रमयोग नुक्कड़ नाटक व जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से अपनी बात लोगों तक पहुँचाएगी। इस नुक्कड़ नाटक मैं इंसान और जानवरों का दोनों का पक्ष रखा जाएगा, तथा एक मांग पत्र तैयार किया जाएगा जो कि सरकार तथा वन मंत्री को सौंपा जाएगा।

अप्रैल में श्रम उत्पाद की खरीद शुरू हो गई है। चर्चा की गई कि सभी महिलाएं श्रम उत्पाद की गुणवत्ता पर ध्यान दें। हल्दी के साथ-साथ अन्य उत्पाद भी बढ़ाएं। इस बार भ्याड़ी कलस्टर में श्रमजन-स्वराज अभियान, प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान, सामाजिक पूंजी बढ़ाओ अभियान के तहत अलग-अलग मुद्दे निकाले गए। जिसमें गांव में रास्तों की सुविधा न होना, सड़क की सुविधा न होना, बुजुर्ग महिलाओं पुरुषों के बीमार होने पर कोई सुविधा न होना निकल कर सामने आई तथा इन पर कैसे आगे काम करना है इस पर बात की गई।

बाघ के आतंक से लोगों का जानवरों को बेच देना फिलहाल चला हुआ है । अकेले-अकेले इधर उधर जाने में भी आम आदमी कतरा रहे हैं। गांव से पलायन भी अब और ज्यादा बढ़ रहा है। यह आशंका लगती है कि शायद अब पहाड़ कहीं और ज्यादा खाली न हो जाए। इन्हीं सब बातों के साथ अप्रैल माह की बैठक की गई। मई माह की बैठकों का प्रारूप तैयार किया गया।

चाँच धारा विकास कार्यक्रम

23 अप्रैल, 2023

स्रोत का नाम	पी0एच0			टी0डी0एस0		
	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग
डौंठा पानी नौला	6.4	6.4	6.4	25	25	25
धारा पानी	7	7	7	40	40	40
शिव मन्दिर नौला	7.1	7.1	7.1	37	37	37
हैंड पंप नौला	6.7	6.7	6.7	40	40	40

उत्तराखण्ड शासन

देवभूमि उत्तराखण्ड

चारधाम यात्रा में

पधारने वाले सभी श्रद्धालुओं का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन

"चारधाम यात्रा के दौरान देवभूमि आने वाले श्रद्धालुओं खास तौर पर बुजुर्गों, महिलाओं एवं बच्चों की सुविधा के दृष्टिगत सरकार द्वारा आवश्यक प्रबंध किए गए हैं। हमारी सरकार आपकी यात्रा को सुखद, सुगम और पर्यटक के अनुभव को यादगार बनाने के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है।"

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

"21वीं सदी के विकसित भारत के निर्माण के दो प्रमुख स्तंभ हैं। पहला अपनी विरासत पर गर्व और दूसरा विकास के लिए हर संभव प्रयास करना। आज उत्तराखण्ड, इन दोनों ही स्तंभों को मजबूत कर रहा है। ये दशक उत्तराखण्ड का दशक होगा।"

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

महत्वपूर्ण सूचना

- पंजीकरण करते हुए कृपया सही मोबाइल नंबर प्रदान करें
- सभी तीर्थयात्रियों से अनुरोध है कि यात्रा शुरु करने से पहले अपनी चिकित्सकीय जांच कराएं
- क्षेत्र और जलवायु के साथ खुद को ढालने के लिए अपनी यात्रा की योजना बनाएं
- greencard.uk.gov.in पर अपने वाहन का रजिस्ट्रेशन करवाएं

पंजीकरण के लिए

registrationandtouristcare.uk.gov.in

+91-8394833833
(Type 'yatra' on WhatsApp)

Toll Free number 0135 1364

Download the App:
touristcareuttarakhand

पंच केदार — केदारनाथ | तुंगनाथ | रुद्रनाथ | मध्यमहेश्वर | कल्पेश्वर

पंच बद्री — बद्रीनाथ/विशाल बद्री | योगध्यान बद्री | भविष्य बद्री | वृद्ध बद्री | आदि बद्री

पंच प्रयाग — विष्णुप्रयाग | नंदप्रयाग | कर्णप्रयाग | रुद्रप्रयाग | देवप्रयाग

मानसखण्ड मंदिर माला मिशन

मुख्यमंत्री, श्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में चारधाम की तर्ज पर मानसखण्ड मंदिर माला मिशन के प्रथम चरण में कुमाऊं के 16 मंदिरों को विश्वस्तरीय सुविधाओं के साथ विकसित किया जा रहा है।

मानसखण्ड मंदिर माला के अंतर्गत आने वाले प्रथम चरण के पौराणिक मंदिर

जागेश्वर महादेव | चितई गोलज्यू मंदिर | सूर्यदेव मंदिर कटारमल | कसारदेवी मंदिर | नंदा देवी मंदिर | पाताल भुवनेश्वर गंगोलीहाट | हाटकालिका मंदिर गंगोलीहाट | बागनाथ महादेव बागनाथ | बैजनाथ मंदिर | पाताल रुद्रेश्वर गुफा | पूर्णागिरी मंदिर | देवीधुरा | बाराहीदेवी मंदिर | बालेश्वर मंदिर | नैनादेवी मंदिर | कैंची धाम मंदिर | चैती बाल सुंदरी मंदिर

देवभूमि के पवित्र चारधाम यात्रा के दौरान सभी तीर्थयात्रियों से साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखने की अपील की जाती है। कचरा केवल कूड़ेदान में डालें। सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करें। जिम्मेदार बनें, स्वच्छता बनाए रखने और पर्यावरण के संरक्षण में योगदान दें। सभी तीर्थयात्री और पर्यटक, स्वच्छता के मानदंडों का पालन करें और आस्था को नया आयाम दें।

हेलीकॉप्टर/ अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए आधिकारिक वेबसाइट पर जाएं

www.heliyatra.irctc.co.in

आईआरसीटीसी हेल्पलाइन नं० 1800110139
07556698100 | 07554090400

पर्यटक अपने यात्रा व्यय का 5% स्थानीय उत्पादों पर खर्च करें: प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए वोकल फॉर लोकल की बात कही है। स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा दिये जाने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट की शुरुआत की गई।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में उत्तराखण्ड सरकार ने इस योजना को वन डिस्ट्रिक्ट टू प्रोडक्ट के रूप में आगे बढ़ाया है। बदरीनाथ धाम के निकट माणा में आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों से अपील की थी कि कहीं भी घूमने जाएं तो अपने यात्रा व्यय का 5 प्रतिशत स्थानीय उत्पादों पर खर्च करें। इससे स्थानीय

आर्थिकी में जबरदस्त परिवर्तन देखने को मिलेगा। किसी भी क्षेत्र की पहचान उसकी भाषा-बोली एवं स्थानीय उत्पादों से होती है, इनको बढ़ावा देने के लिए हर संभव प्रयास किये जाने चाहिए।

उत्तराखण्ड पर्यटन टोल फ्री नं० : 1364 फोन नं० 0135 3520100

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी

www.uttarainformation.gov.in | DIPR_UK | UttarakhandDIPR | UttarakhandDIPR

बाल मंच का पृष्ठ

इस पृष्ठ में श्रमयोग के ``प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान'' से निकली जानकारियों के साथ-साथ बाल मंच की गतिविधियों एवं बाल मंच के सदस्यों की अभिव्यक्तियों को स्थान दिया जाता है। एवं बच्चों से सम्बन्धित लेखन को स्थान दिया जाता है।

-सम्पादक

विज्ञान मंथन कार्यक्रम का आयोजन

विज्ञान एवं तकनीकी संचार परिषद, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के तत्वाधान में देहरादून की संस्था स्पेक्स द्वारा टिहरी गढ़वाल जिले के विद्यालयों में अप्रैल माह में विज्ञान मंथन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों के साथ विज्ञान विषयों में रूचि पैदा करने के उद्देश्य से संवाद किया गया। विशेषज्ञों ने विज्ञान विषयों में कक्षा में की जाने वाली पढ़ाई के दैनिक जीवन में उपयोग पर बातें की। विज्ञान मंथन कार्यक्रम का उद्देश्य बताते हुए डॉ0 अजय कुमार ने कहा कि यह कार्यक्रम विज्ञान विषयों में रूचि उत्पन्न करने में साथ-साथ बच्चों में वैज्ञानिक चेतना पैदा करने के उद्देश्य से आयोजित किये जा रहे हैं।

पानी का पीएच देखती छात्रा।

इस दौरान तापमान, हवा, वर्षा, मिट्टी, पर्यावरण इत्यादि पर विस्तार से बातें हुई। विशेषजों ने बच्चों को वर्षामापी यन्त्र की मदद से बारिश को नापने की विधि समझाई। इसके बाद बच्चों ने अपने विद्यालय प्रांगण में प्रति वर्ष वर्षा से प्राप्त होने वाले जल की लीटर में गणना की व जाना की वर्षा से हमें अपनी जरूरत से कई गुना ज्यादा पानी मिलता है। बच्चों ने अपनी जिज्ञासाएं भी प्रस्तुत की जिनका विशेषज्ञों द्वारा समाधान किया गया।

विज्ञानं मंथन कार्यक्रम के अंतर्गत 17 अप्रैल को ऋषिकेश के विद्यालयों राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, राजीव ग्राम व लाल बहादुर शास्त्री विद्यालय ढालवाला मे 18 अप्रैल को राजकीय इन्टर कॉलेज, दुवाधार व राजकीय इन्टर कॉलेज, देवाधार और 19 अप्रैल को राजकीय इन्टर कॉलेज, जाजल, राजकीय जूनियर हाई स्कूल, चौपा व राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, चौपा में कार्यक्रम किया गया। राजकीय जूनियर हाई स्कूल, चौपा में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता जमना लाल बजाज पुरुस्कार से सम्मानित पर्यावरणविद धूम सिंह नेगी ने की।

कार्यक्रम में सभी विद्यालयों के प्रधानाचार्य व शिक्षक उपस्थित रहे। संचालज विजय ध्यानी ने किया।

विज्ञान की किताबों से जैविक विकास का सिद्धांत हटाए जाने पर वैज्ञानिकों, शिक्षकों ने चिंता जताई

एनसीईआरटी ने दसवीं की विज्ञान की पाठ्यपुस्तक से चार्ल्स डार्विन, पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति समेत जैविक विकास (एवोल्यूशन) संबंधी सामग्री को हटाया है। इसे वापस सिलेबस में शामिल करने की मांग करते हुए 1,800 से अधिक वैज्ञानिकों और शिक्षकों ने कहा कि वे विज्ञान की स्कूली शिक्षा में किए 'इस तरह के खततरनाक बदलावों' से असहमत हैं।

नई दिल्ली, सीबीएसई के दसवीं कक्षा के पाठ्यक्रम में विज्ञान के सिलेबस से जैविक विकास के सिद्धांत को हटाने के राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) के फैसले के बारे में 1,800 से अधिक वैज्ञानिकों, विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षकों और अन्य शिक्षकों ने गंभीर चिंता जताई है।

इंडियन एक्सप्रेस के अनुसार, उन्होंने कहा कि विकास की प्रक्रिया को समझना 'वैज्ञानिक स्वभाव के निर्माण में महत्वपूर्ण' है और छात्रों को इस जोखिम से वंचित करना 'शिक्षा का मजाक' है। ब्रेकथ्रू साइंस सोसाइटी, विज्ञान, संस्कृति और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के लिए प्रतिबद्ध एक राष्ट्रव्यापी स्वैच्छिक संगठन है, जिसने 'करिकुलम से विकास सिद्धांत के बहिष्कार के खिलाफ एक अपील' शीर्षक से एक खुला पत्र जारी किया है। इसमें मांग की गई है कि माध्यमिक शिक्षा में डार्विनियन विकास के सिद्धांत को बहाल किया जाए।

पत्र पर 1,800 से अधिक वैज्ञानिकों, विज्ञान शिक्षकों और शिक्षकों ने हस्ताक्षर किए हैं, जिनमें टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (टीआईएफआर), इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च (आईआईएसईआर) और आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के वैज्ञानिक शामिल हैं। इनका मानना है कि विज्ञान की इस बुनियादी खोज को जानने से वंचित रहने पर छात्रों की विचार प्रक्रिया में गंभीर रूप से प्रभावित होगी।

पत्र में कहा गया है, 'जैविक विकास (Evolutionary biology) का ज्ञान और समझ न केवल जीव विज्ञान के किसी भी उप-क्षेत्र के लिए, बल्कि हमारे आसपास की दुनिया को समझने के लिए भी महत्वपूर्ण है। एवोलुशनरी बायोलॉजी विज्ञान का एक क्षेत्र है जिसका संबंध समाज और राष्ट्रों के रूप में जिन समस्याओं का सामना करते हैं, उनसे कैसे निपटते हैं जैसे चिकित्सा और दवा की खोज, महामारी विज्ञान, पारिस्थितिकी और पर्यावरण से लेकर मनोविज्ञान तक है, साथ ही यह मनुष्यों के बारे में हमारी समझ और जीवन में उनके स्थान के बारे में भी बताता है। हालांकि हम में से कई स्पष्ट रूप से नहीं जानते हैं कि कई अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों के बीच प्राकृतिक चयन का सिद्धांत हमें यह समझने में मदद करता है कि कोई महामारी कैसे आगे बढ़ती है या कुछ प्रजातियां विलुप्त क्यों हो जाती हैं।'

अखबार के अनुसार, एनसीईआरटी के पाठ्यपुस्तकों में विज्ञान विषयों को 'युक्तिसंगत' बनाने की कवायद में दसवीं कक्षा की किताब का अध्याय 9, जिसका शीर्षक 'आनुवांशिकता और विकास' (Heredity and Evolution) था, को अब केवल 'आनुवंशिकता' कर दिया गया है। इस अध्याय में से हटाए गई सामग्री में चार्ल्स रॉबर्ट डार्विन, पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति, मॉलिक्यूलर फाइलोजेनी, विकास और विकासवादी संबंधों का पता लगाना समेत कुछ अन्य टॉपिक भी शामिल हैं।

टेलीग्राफ के अनुसार, पत्र के हस्ताक्षरकर्ताओं ने यह भी कहा, 'भारतीय छात्रों का केवल एक छोटा हिस्सा ही दसवीं और बारहवीं में विज्ञान स्ट्रीम चुनता है और उससे भी छोटा हिस्सा जीव विज्ञान (बायोलॉजी) को अपने विषय के रूप में चुनता है। इन परिस्थितियों में कक्षा दस के सिलेबस से विकास की प्रमुख अवधारणाओं को हटाने के परिणामस्वरूप अधिकांश छात्र इस महत्वपूर्ण हिस्से से वंचित रह जाएंगे।'

उन्होंने कहा कि वे विज्ञान की स्कूली शिक्षा में 'इस तरह के खतरनाक बदलावों' से असहमत हैं और दसवीं कक्षा के पाठ्यक्रम में विकास सिद्धांत को वापस शामिल किए जाने की मांग करते हैं।

टेलीग्राफ द्वारा इन बदलावों और वैज्ञानिकों की चिंता को लेकर एनसीईआरटी के निदेशक से सवाल किए जाने पर उनका जवाब नहीं दिया गया। उल्लेखनीय है कि बीते दिनों सामने आया था कि एनसीईआरटी ने मुगलों के इतिहास पर पूरे अध्यायों के साथ गुजरात में 2002 के सांप्रदायिक दंगे, नक्सली आंदोलन और दलित लेखकों के जिक्र को भी अपने पाठ्यक्रम से हटाया है। इसके परिणामस्वरूप सीबीएसई, उत्तर प्रदेश और एनसीईआरटी पाठ्यक्रम को मानने वाले अन्य राज्य बोर्डों के सिलेबस में बदलाव होंगे।

इन्हीं बदलावों में भारत के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद के सभी संदर्भों और जम्मू कश्मीर के विलय की शर्त को भी हटा दिया है। कक्षा 11 की राजनीति विज्ञान की किताब 'इंडियन कॉन्स्टिट्यूशन ऐट वर्क' के पहले अध्याय से आजाद के संदर्भ को हटाया गया है।

द वायर हिन्दी से साभार

बाल मंच के पर्यावरण चेतना केन्द्रों की रिपोर्ट

दिनाँक	प्रात: 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)				सांय 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)			
	गिगड़े सल्ट	औलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट	गिगड़े सल्ट	औलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट
1 अप्रैल	16	18	18	21	17	17.5	20	21.5
2 अप्रैल	16	19	19	21	18	17.5	21	23
3 अप्रैल	17	18	20	21	20	18.5	22	23
4 अप्रैल	17	17.5	17	21	20	18	21	23
5 अप्रैल	17	18	20	23	20	19.5	21	25
6 अप्रैल	17	18.5	19	23	20	20	22	25
7 अप्रैल	18	18	18	23	21	19.5	20	26
8 अप्रैल	20	21	19	24	23	22	20	26
9 अप्रैल	21	23	20	25	24	24.5	18	27.5
10 अप्रैल	21	24	21	24	23	24.5	22	27.5
11 अप्रैल	22	25	20	25	24	26	19	27.5
12 अप्रैल	24	25.5	20	25	24	26	18	28
13 अप्रैल	24	26	20	26	25	27	28	30
14 अप्रैल	24	25.5	25	27	25	26	25	30
15 अप्रैल	25	26	19	28	26	25	27	30
16 अप्रैल	26	25	20	28	26	24.5	25	30
17 अप्रैल	26	26	17	28	27	24	25	31
18 अप्रैल	27	25.5	20	28	28	25	22	32
19 अप्रैल	26	24	18	28	28	24.5	21	32
20 अप्रैल	25	24.5	19	28	27	24	21	32
21 अप्रैल	24	25	20	28	26	24	23	30
22 अप्रैल	22	26	18	27	26	24.5	20	29
23 अप्रैल	22	25.5	20	26	26	26	23	29
24 अप्रैल	22	25	19	26	26	24.5	21	27

वर्षा (मीमी)

	बल्यूली (सल्ट)
1 अप्रैल	7
20 अप्रैल	3

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक शंकर दत्त ने नौटियाल प्रिंटर्स ग्राम माजरी माफी, मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से मुद्रित कर ग्राम श्यामपुर, पो0 अम्बीवाला, प्रेमनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।

सम्पादक-अजय कुमार

सभी पद अवैतनिक हैं।

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा)